गौमाता राष्ट्रमाता
स्वतःस्फूर्त गौ-प्रतिष्ठा आन्दोलन
Visit : www.1008.guru / Ph. : 7417417414

हिन्दी दैनिक

राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No. : MAHHIN/2008/24084. www.rashtriyaswabhimaan.com

वर्ष : 17 | अंक : 189 | मुंबई, शनिवार, 21 मार्च 2026 | पृष्ठ : 4 | मूल्य 1 रुपए

खबर संक्षेप

मुंबई प्रेस क्लब को बम से उड़ाने की धमकी!

मुंबई प्रेस क्लब को एक धमकी भरा ईमेल मिलने के बाद इलाके में हड़कंप मच गया है। पुलिस और बम निरोधक दस्ते (BDDS) ने मौके पर पहुंचकर मोर्चा संभाल लिया है। परिसर को खाली कराकर चप्पे-चप्पे की तलाशी ली जा रही है। सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है।

राज्यसभा चुनाव में 'क्रॉस-वोटिंग' पर सख्ती: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हरियाणा के एक और विधायक को भेजा नोटिस

चंडीगढ़ में हाल ही में हुए राज्यसभा चुनावों के बाद सियासी हलचल लगातार तेज होती जा रही है। 'क्रॉस-वोटिंग' के आरोपों को लेकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने ही विधायकों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई का सिलसिला जारी रखते हुए एक और विधायक को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। पार्टी की इस सख्ती को संगठनात्मक अनुशासन बनाए रखने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।
ताजा कार्रवाई के तहत कांग्रेस ने हरियाणा के रतिया विधानसभा क्षेत्र से विधायक जरनैल सिंह को नोटिस थमाया है। उन पर आरोप है कि उन्होंने राज्यसभा चुनाव के दौरान पार्टी लाइन से हटकर मतदान किया, जिसे 'क्रॉस-वोटिंग' की श्रेणी में रखा गया है। यह मामला ऐसे समय सामने आया है, जब पार्टी पहले ही चार अन्य विधायकों को इसी तरह के आरोपों में नोटिस भेज चुकी है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस इस मुद्दे को गंभीरता से ले रही है।

इस पूरी प्रक्रिया की अगुवाई कर रहे प्रदेश कांग्रेस की अनुशासनात्मक कार्रवाई समिति के अध्यक्ष धर्मपाल मलिक ने संबंधित विधायक को औपचारिक रूप से नोटिस सौंपा है। वहीं समिति के सदस्य सचिव रोहित जैन ने इस घटनाक्रम की पुष्टि करते हुए बताया कि चुनाव के दौरान विधायक के आचरण की समीक्षा के बाद यह कदम उठाया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि पार्टी अनुशासन के उल्लंघन को किसी भी स्थिति में नजरअंदाज नहीं किया जाएगा।

चुनावी विज्ञापनों पर सख्ती: अब बिना सर्टिफिकेट नहीं चलेगा कोई पॉलिटिकल एड

नई दिल्ली। आगामी विधानसभा चुनावों से पहले भारत निर्वाचन आयोग ने राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के लिए कड़े दिशा-निर्देश जारी किए हैं, जिनका सीधा असर चुनाव प्रचार के तौर-तरीकों पर पड़ेगा। अब सोशल मीडिया से लेकर टीवी और रेडियो तक किसी भी प्लेटफॉर्म पर राजनीतिक विज्ञापन जारी करने से पहले अनिवार्य रूप से प्रमाणन लेना होगा। आयोग का यह कदम चुनाव प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। निर्देशों के अनुसार, किसी भी प्रकार का पॉलिटिकल एड बिना पूर्व अनुमति के प्रसारित नहीं किया जा सकेगा। इसके लिए राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को मीडिया सर्टिफिकेशन एंड मॉनिटरिंग कमेटी से सर्टिफिकेट लेना अनिवार्य होगा। यह नियम टीवी, रेडियो, सार्वजनिक स्थानों पर लगाए जाने वाले ऑडियो-वीडियो डिस्प्ले, ई-पेपर, बल्क SMS, वॉयस मैसेज, इंटरनेट और सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लागू होगा। यह सख्ती खासतौर पर उन पांच राज्यों—असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल—में होने वाले विधानसभा चुनावों के मद्देनजर लागू की गई है। इसके अलावा छह राज्यों में होने वाले उपचुनावों पर भी यह नियम प्रभावी रहेगा। आयोग का मानना है कि डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव के चलते चुनाव प्रचार में पारदर्शिता बनाए रखना पहले से अधिक जरूरी हो गया है। सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया को भी स्पष्ट किया गया है। राज्य या केंद्रशासित प्रदेश स्तर पर पंजीकृत राजनीतिक दलों को राज्य स्तरीय MCMC से अनुमति लेनी होगी, जबकि चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों को जिला स्तरीय MCMC के समक्ष आवेदन करना होगा। इस व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर स्तर पर विज्ञापनों की सामग्री की जांच हो सके और किसी भी भ्रामक या आपत्तिजनक सामग्री को प्रसारित होने से पहले ही रोका जा सके। इसके साथ ही, आयोग ने अपील की व्यवस्था भी बनाई है। यदि किसी राजनीतिक दल या उम्मीदवार को सर्टिफिकेशन प्रक्रिया में आपत्ति होती है, तो वह राज्य स्तर पर गठित अपील समिति के पास जा सकता है। यह समिति मुख्य निर्वाचन अधिकारी (CEO) की अध्यक्षता में काम करेगी और सर्टिफिकेशन से जुड़े विवादों का समाधान करेगी। विशेषज्ञों के अनुसार, यह कदम 'फेक न्यूज', भ्रामक प्रचार और आपत्तिजनक सामग्री पर रोक लगाने में अहम भूमिका निभा सकता है। पिछले कुछ चुनावों में सोशल मीडिया के जरिए गलत सूचनाओं के प्रसार ने चुनावी माहौल को प्रभावित किया था, जिसे देखते हुए आयोग ने यह सख्त रुख अपनाया है। आयोग का यह भी मानना है कि चुनावी विज्ञापनों के जरिए मतदाताओं को प्रभावित करने की कोशिशें अक्सर सीमा पार कर जाती हैं। ऐसे में यदि पहले से सामग्री की जांच हो जाए, तो चुनावी प्रक्रिया को अधिक निष्पक्ष बनाया जा सकता है। इसके अलावा, यह नियम सभी दलों और उम्मीदवारों के लिए समान रूप से लागू होगा, जिससे चुनावी मैदान में बराबरी का माहौल सुनिश्चित किया जा सके।

ट्राइडेंट-ओबेरॉय में श्रम कानून उल्लंघन का आरोप: ओवरटाइम विवाद, जबरन मीटिंग और कोर्ट केस से बढ़ी हलचल

मुंबई। देश के प्रतिष्ठित होटल समूह EIH Ltd के ट्राइडेंट-ओबेरॉय होटलों में कर्मचारियों के कथित शोषण, ओवरटाइम भुगतान में अनियमितता और श्रम कानूनों के उल्लंघन को लेकर मामला अब गंभीर कानूनी रूप ले चुका है। नए खुलासों ने इस विवाद को और अधिक संवेदनशील बना दिया है।

ओवरटाइम भुगतान और श्रम कानून उल्लंघन के आरोप

सूत्रों और कर्मचारियों के अनुसार, होटल के अकाउंट/फाइनेंस विभाग में कर्मचारियों से तय समय से अधिक काम लिया जाता है, लेकिन उन्हें ओवरटाइम (ओटी) का पूरा भुगतान नहीं किया जाता। आरोप है कि महाराष्ट्र शॉप एंड एस्टैब्लिशमेंट एक्ट के प्रावधानों का सही तरीके से पालन नहीं किया जा रहा।

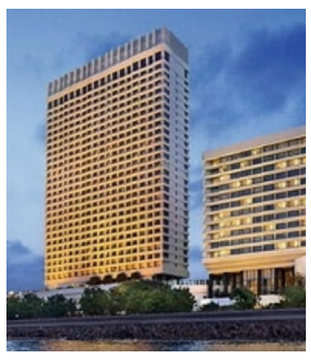

"ड्यूटी के बाद मीटिंग" —

नया विवाद

कर्मचारियों ने यह भी आरोप लगाया है कि फाइनेंशियल कंट्रोलर पराग बूव (पराज बूव) द्वारा नियमित रूप से शाम 6 बजे मीटिंग बुलाई जाती है, जो कर्मचारियों की ड्यूटी समाप्त होने का समय होता है। इससे कर्मचारियों को मजबूरन अतिरिक्त समय तक रुकना पड़ता है, जिसे कथित तौर पर ओवरटाइम में शामिल नहीं किया जाता।

Case Status

First Hearing Date	24th July 2025
Next Hearing Date	26th March 2026
Case Stage	REPLY/SAY
Court Number and Judge	84-COURT 84 ADDL. SESSIONS JUDGE

Petitioner and Advocate

1) Vikramjit Singh Oberoi MD, Through Constituted Attorney Dhiraj Mehta In MA 1640/2025
Advocate- AMOGH PATKER

Respondent and Advocate

1) Sanjay Gokul Sonar
2) EIH LIMITED

Acts

Under Act(s)	Under Section(s)
Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita	438

Subordinate Court Information

Court Number and Name	---
Case Number and Year	CRI CASE - 0002[illegible] 2025

दबाव और डोमेस्टिक इंक्वायरी का आरोप

एक पूर्व कर्मचारी ने दस्तावेजी साक्ष्यों के साथ दावा किया है कि कर्मचारियों पर लगातार अतिरिक्त काम का दबाव बनाया जाता है। विरोध करने पर उनके खिलाफ डोमेस्टिक इंक्वायरी शुरू कर नौकरी से निकालने का डर दिखाया जाता है, जिससे कार्यस्थल पर भय का माहौल बना हुआ है।

निरीक्षण और आधिकारिक पुष्टि

बीएमसी 'ए' वार्ड के शॉप एंड एस्टैब्लिशमेंट निरीक्षक संजय सोनार को शिकायत मिलने के बाद होटल में निरीक्षण किया गया। संपादक से फोन पर बातचीत में उन्होंने पुष्टि की कि EIH Ltd(इस्ट इंडिया होटल लि.) के खिलाफ कोर्ट में मामला दर्ज किया गया है, हालांकि विस्तृत जानकारी साझा करने से उन्होंने इनकार किया।

अदालत में केस, वरिष्ठ अधिकारी नामजद

निरीक्षण और डिजिटल ड्यूटी रिकॉर्ड के आधार पर कंपनी के एमडी विक्रम सिंह ओबेरॉय और सीनियर वाइस प्रेसिडेंट एवं जनरल मैनेजर धीरज मेहता के खिलाफ महाराष्ट्र शॉप्स and इस्टेब्लिसमेंट ऐक्ट की धारा 15 के तहत दादर स्थित न्यायालय में मामला दर्ज किया गया है।
इस मामले की पहली सुनवाई 5 मई 2025 को हो चुकी है।

यूनियनों की भूमिका पर भी सवाल

कुछ कर्मचारियों ने यह भी आरोप लगाया है कि श्रमिक संगठन, जिनसे उन्हें समर्थन की उम्मीद होती है, वे भी प्रबंधन के साथ मिलकर कर्मचारियों की समस्याओं को दबाने में भूमिका निभा रहे हैं। इससे कर्मचारियों में असंतोष और असुरक्षा का माहौल बढ़ रहा है।

प्रबंधन का पक्ष

वहीं, होटल के एचआर हेड एस. डेविड नायडू ने सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि कंपनी सभी श्रम कानूनों का पालन करती है और ओवरटाइम का भुगतान नियमानुसार किया जाता है। उन्होंने शोषण के आरोपों को "पूरी तरह निराधार" बताया।

निष्कर्ष

इस पूरे मामले में कई गंभीर पहलू सामने आए हैं—ओवरटाइम भुगतान पर विवाद, ड्यूटी के बाद मीटिंग का दबाव, डोमेस्टिक इंक्वायरी के जरिए कथित भय का माहौल और अब अदालत में दर्ज मामला। ऐसे में जरूरी हो गया है कि श्रम विभाग और संबंधित प्रशासन निष्पक्ष जांच करे, ताकि सच्चाई सामने आए और कर्मचारियों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित हो सके। यदि आरोप साबित होते हैं, तो यह मामला देश की होटल इंडस्ट्री में एक बड़ा उदाहरण बन सकता है।

आतंकवाद पर दुनिया को राहत, लेकिन खतरा बरकरार: ग्लोबल टेररिज्म इंडेक्स 2026 में पाकिस्तान सबसे ज्यादा प्रभावित, भारत की स्थिति बेहतर

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में जहां एक ओर सकारात्मक संकेत मिले हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ क्षेत्रों में बढ़ती अस्थिरता ने भविष्य को लेकर नई चिंताएं भी खड़ी कर दी हैं। ग्लोबल टेररिज्म इंडेक्स 2026 की ताजा रिपोर्ट बताती है कि दुनिया भर में आतंकवादी घटनाओं और उनसे होने वाली मौतों में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है, लेकिन दक्षिण एशिया और अफ्रीका जैसे क्षेत्रों में हालात अभी भी नाजुक बने हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में वैश्विक स्तर पर आतंकवाद से होने वाली मौतों में 28 प्रतिशत की कमी आई है। मौतों की संख्या घटकर 5,582 रह गई, जो पिछले वर्षों की तुलना में एक बड़ा सुधार है। इसी तरह, आतंकी हमलों की कुल संख्या में भी 22 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है और यह आंकड़ा 2,944 तक सिमट गया है। कुल 81 देशों में स्थिति में सुधार देखा गया, जबकि 19 देशों में हालात पहले से खराब हुए हैं। यह आंकड़े यह संकेत देते हैं कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ प्रयासों का असर दिखाई दे रहा है, लेकिन खतरा पूरी तरह टला नहीं है।

हालांकि इस वैश्विक सुधार के बीच पाकिस्तान की स्थिति सबसे ज्यादा चिंताजनक बनी हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक, 2025 में पाकिस्तान आतंकवाद से सबसे अधिक प्रभावित देश बनकर उभरा है। वहां 1,139 लोगों की मौत हुई और 1,045 आतंकी घटनाएं दर्ज की गईं, जो पिछले एक दशक में सबसे ज्यादा हैं। यह स्थिति अचानक नहीं बनी, बल्कि लंबे समय से पनप रही समस्याओं का परिणाम है। विशेष रूप से तेहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान जैसे संगठनों की गतिविधियों में तेजी ने हालात को और बिगाड़ा है। रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में टीटीपी के हमलों में 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह संख्या 595 तक पहुंच गई, जबकि इन हमलों में 637 लोगों की जान गई। इस परिदृश्य के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण अफगानिस्तान में बदलते हालात भी हैं। तालिबान के सत्ता में आने के बाद सीमा पार से होने वाली गतिविधियों में वृद्धि हुई है, जिससे पाकिस्तान की आंतरिक सुरक्षा पर दबाव बढ़ा है। यह स्थिति पूरे दक्षिण एशिया के लिए चिंता का विषय बनी हुई है।

भारत के लिए इस रिपोर्ट में राहत भरी खबर सामने आई है। भारत इस सूचकांक में 13वें स्थान पर है और दक्षिण एशिया में पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बाद तीसरे स्थान पर आता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि 2025 में भारत में आतंकी घटनाओं में 43 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। पिछले एक दशक में भारत के स्कोर में लगातार सुधार हुआ है, जो सुरक्षा एजेंसियों और नीतियों की प्रभावशीलता को दर्शाता है।

दक्षिण एशिया के अन्य देशों की बात करें तो बांग्लादेश में 2025 के दौरान कोई आतंकी हमला दर्ज नहीं किया गया, जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। वहीं नेपाल में लगातार तीसरे वर्ष भी आतंकवादी घटनाओं का अभाव रहा है। यह दर्शाता है कि क्षेत्र के कुछ देशों ने इस दिशा में प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया है।

लापरवाही का गड्ढा बना मौत का कुआं: मलाड में 8 वर्षीय दिव्यांश की दर्दनाक मौत से भड़का आक्रोश

मुंबई के मलाड (पूर्व) इलाके से आई एक दर्दनाक घटना ने पूरे शहर को झकझोर कर रख दिया है। खेलते-खेलते एक मासूम की जिंदगी इस तरह खत्म हो जाएगी, यह किसी ने नहीं सोचा था। 8 वर्षीय दिव्यांश राजेश मौर्य की मौत केवल एक हादसा नहीं, बल्कि एक ऐसी लापरवाही का परिणाम है, जिसने एक परिवार की दुनिया उजाड़ दी और प्रशासनिक व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह घटना 19 मार्च 2026 की रात करीब 8 बजे कुरार विलेज के अंबेवाड़ी स्थित चगन पटेल चाल इलाके में हुई, जहां एक निर्माण स्थल पर सुरक्षा इंतजामों की भारी कमी ने एक बच्चे की जान ले ली।
बताया जा रहा है कि दिव्यांश अन्य बच्चों के साथ खेल रहा था, तभी उसकी गेंद पास ही स्थित एक निर्माणाधीन स्थल के गहरे गड्ढे में जा गिरी। मासूम बच्चा अपनी गेंद निकालने के लिए वहां गया, लेकिन उसे यह अंदाजा नहीं था कि वह गड्ढा पानी से भरा हुआ है और उसके भीतर जाना कितना खतरनाक साबित हो सकता है। यह गड्ढा माउली कंस्ट्रक्शन द्वारा खोदा गया था, जो बारिश या किसी रिसाव के कारण पानी से लबालब भर चुका था। जैसे ही दिव्यांश उसमें उतरा, उसका संतुलन बिगड़ गया और वह गहराई में डूब गया। आसपास मौजूद लोगों को जब तक इस बात का एहसास हुआ, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।
स्थानीय निवासियों के अनुसार, इस निर्माण स्थल पर सुरक्षा के नाम पर कोई इंतजाम नहीं किए गए थे। न तो गड्ढे के चारों ओर बैरिकेडिंग की गई थी और न ही कोई चेतावनी बोर्ड लगाया गया था, जिससे लोगों को संभावित खतरे के बारे में आगाह किया जा सके। यही लापरवाही इस हादसे की सबसे बड़ी वजह बनकर सामने आई है। इलाके के लोगों का कहना है कि यदि बिल्डर ने न्यूनतम सुरक्षा मानकों का पालन किया होता, तो शायद यह हादसा टल सकता था।
घटना के बाद स्थानीय लोगों और पुलिस ने तुरंत बचाव कार्य शुरू किया और काफी मशक्कत के बाद दिव्यांश को गड्ढे से बाहर निकाला गया। उसे तुरंत कांदिवली स्थित भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर अस्पताल ले जाया गया, लेकिन वहां डॉक्टरों ने उसे 'ब्रॉट डेड' घोषित कर दिया। यह खबर जैसे ही इलाके में फैली, पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है और आसपास के लोग भी इस घटना से गहरे आहत हैं।
इस हादसे के बाद स्थानीय नागरिकों में जबरदस्त आक्रोश देखने को मिला। गुस्साए लोगों ने कुरार पुलिस स्टेशन का घेराव कर बिल्डर और ठेकेदार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। उनका कहना है कि यह केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से गैर-इरादतन हत्या का मामला है, जिसमें जिम्मेदार लोगों को तुरंत गिरफ्तार किया जाना चाहिए। लोगों का आरोप है कि ऐसे निर्माण स्थलों पर अक्सर सुरक्षा नियमों की अनदेखी की जाती है और प्रशासन भी इस पर सख्ती नहीं दिखाता, जिसके कारण निर्दोष लोग अपनी जान गंवा बैठते हैं।
यह घटना एक बार फिर इस बात को उजागर करती है कि शहर में तेजी से हो रहे निर्माण कार्यों के बीच सुरक्षा मानकों की अनदेखी किस हद तक खतरनाक हो सकती है। खासकर घनी आबादी वाले इलाकों में जहां बच्चे खेलते हैं, वहां इस तरह के खुले और असुरक्षित गड्ढे किसी भी समय हादसे को न्योता दे सकते हैं। इसके बावजूद कई बिल्डर लागत बचाने या लापरवाही के चलते जरूरी सुरक्षा उपायों को नजरअंदाज कर देते हैं।
विशेषज्ञों का मानना है कि निर्माण स्थलों पर सुरक्षा के सख्त नियम लागू किए जाने चाहिए और उनके उल्लंघन पर कड़ी सजा का प्रावधान होना चाहिए।

'शादी साझेदारी है, सेवा नहीं': सुप्रीम कोर्ट की अहम टिप्पणी से बदले रिश्तों के मायने

नई दिल्ली। भारतीय समाज में विवाह को अक्सर परंपराओं और जिम्मेदारियों के ढांचे में देखा जाता रहा है, लेकिन बदलते समय के साथ न्यायपालिका भी इन रिश्तों की नई परिभाषा गढ़ रही है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट की एक महत्वपूर्ण टिप्पणी ने वैवाहिक संबंधों में समानता और साझेदारी की अवधारणा को स्पष्ट रूप से सामने रखा है। अदालत ने साफ कहा कि पत्नी कोई 'नौकरानी' नहीं है और घरेलू काम केवल उसी की जिम्मेदारी मानना गलत है।
यह टिप्पणी उस समय आई जब एक तलाक मामले की सुनवाई के दौरान पति ने पत्नी पर घर के काम न करने और खाना न बनाने को 'क्रूरता' का आधार बताया। मामले की सुनवाई कर रही पीठ, जिसमें विक्रम नाथ और संदीप मेहता शामिल थे, ने इस दलील को खारिज करते हुए स्पष्ट किया कि इस तरह के कारणों को वैवाहिक क्रूरता नहीं माना जा सकता। अदालत ने जोर देकर कहा कि विवाह एक साझेदारी है, जहां दोनों पक्षों को समान रूप से जिम्मेदारियां निभानी होती हैं।
मामले में सामने आए तथ्यों के अनुसार, पति एक सरकारी स्कूल में शिक्षक है, जबकि पत्नी एक कॉलेज में लेक्चरर के पद पर कार्यरत है। दोनों ही आर्थिक रूप से सक्षम हैं और पेशेवर जीवन में स्थापित हैं। ऐसे में अदालत ने यह भी माना कि जब दोनों ही कामकाजी हैं, तो घरेलू जिम्मेदारियों का बंटवारा भी समान रूप से होना चाहिए। केवल पत्नी से यह अपेक्षा करना कि वह ही सारा घर संभाले, आधुनिक सामाजिक ढांचे के अनुरूप नहीं है।
पति ने अपने आरोपों में कहा कि शादी के कुछ ही समय बाद पत्नी ने घर के काम करने से इनकार कर दिया था। उसने यह भी दावा किया कि पत्नी का व्यवहार अपमानजनक था और वह उसके माता-पिता के प्रति असम्मानजनक भाषा का प्रयोग करती थी।

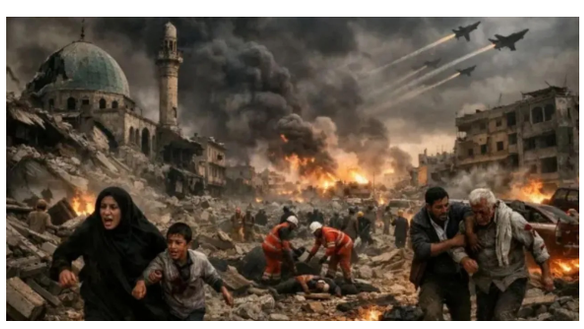

खाड़ी में जंग का असर: महंगाई की मार से आम आदमी बेहाल, पेट्रोल से लेकर थाली तक सब महंगा

नई दिल्ली से लेकर देश के छोटे शहरों तक अब पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष का असर साफ दिखाई देने लगा है। जो जंग हजारों किलोमीटर दूर लड़ी जा रही है, उसका सीधा असर अब भारतीय आम नागरिक की जेब और रसोई तक पहुंच गया है। पेट्रोल, ऑनलाइन खाना, दाल, तेल, सूखे मेवे, इलेक्ट्रॉनिक्स और यहां तक कि इलाज तक—हर चीज धीरे-धीरे महंगी होती जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह युद्ध लंबा खिंचता है, तो आने वाले समय में महंगाई और अधिक बढ़ सकती है, जिससे आम आदमी की आर्थिक स्थिति पर गहरा दबाव पड़ेगा।
सबसे पहला असर ईंधन की कीमतों पर देखने को मिला है। भारत पेट्रोलियम, हिंदुस्तान पेट्रोलियम और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन जैसी सरकारी तेल कंपनियों ने प्रीमियम पेट्रोल के दाम में 2.09 से 2.35 रुपये प्रति लीटर तक की बढ़ोतरी कर दी है। इससे उन लोगों पर सीधा असर पड़ा है, जो हाई-परफॉर्मेंस गाड़ियों का उपयोग करते हैं। भोपाल जैसे शहरों में प्रीमियम पेट्रोल की कीमत 117 रुपये प्रति लीटर तक पहुंच चुकी है। हालांकि सामान्य पेट्रोल की कीमतों में अभी कोई बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन वैश्विक हालात को देखते हुए इसमें भी वृद्धि की आशंका बनी हुई है।
ईंधन की कीमतों में बढ़ोतरी का असर केवल वाहन चलाने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव पूरे सप्लाई चेन पर पड़ता है। परिवहन महंगा होने से हर वस्तु की लागत बढ़ जाती है। यही कारण है कि अब ऑनलाइन खाना मंगवाना भी महंगा हो गया है। Zomato ने अपनी प्लेटफॉर्म फीस

में 19 प्रतिशत की वृद्धि कर दी है। पहले जहां हर ऑर्डर पर 12.50 रुपये का शुल्क लगता था, अब यह बढ़कर 14.90 रुपये हो गया है। रोजाना 20 से 25 लाख ऑर्डर डिलीवर करने वाली इस कंपनी के इस फैसले का सीधा असर लाखों ग्राहकों पर पड़ रहा है।
महंगाई का सबसे बड़ा असर रसोई पर पड़ने वाला है। भारत में दालों की भारी मात्रा आयात की जाती है और शिपिंग लागत बढ़ने के कारण इसकी कीमतों में 5 से 12 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो सकती है। अरहर, मसूर और चना जैसी दालें पहले ही आम आदमी की थाली में अहम स्थान रखती हैं, और इनके महंगे होने से घरेलू बजट पर सीधा असर पड़ेगा। भारत ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, म्यांमार और अफ्रीकी देशों से दालों का आयात करता है, लेकिन अब बढ़ती परिवहन लागत के कारण इनका आयात महंगा होता जा रहा है।
खाद्य तेल की स्थिति भी कुछ अलग नहीं है। भारत अपनी जरूरत का करीब 60 प्रतिशत खाद्य तेल आयात करता है, जिसमें पाम ऑयल, सोयाबीन तेल और सूरजमुखी तेल शामिल हैं। युद्ध के कारण इनकी कीमतों में शुरुआती दौर में 5 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है, जो लंबे समय में 15 से 25 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। इसका असर हर घर की रसोई पर पड़ेगा, क्योंकि तेल रोजमर्रा की जरूरतों में सबसे महत्वपूर्ण होता है।
सूखे मेवे की कीमतों में सबसे अधिक उछाल देखने को मिल सकता है। ईरान और मध्य एशिया से आने वाले बादाम, काजू, पिस्ता और अखरोट जैसे उत्पादों की कीमतें 30 प्रतिशत तक बढ़ने की आशंका है। भारत हर साल अरबों डॉलर के सूखे मेवे आयात करता है, और इनकी कीमतों में वृद्धि त्योहारों और खास मौकों पर लोगों की खरीदारी को प्रभावित कर सकती है।
इलेक्ट्रॉनिक्स और घरेलू उपकरण भी इस महंगाई से अछूते नहीं रहेंगे। भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार काफी बड़ा है और इसमें आयात की भूमिका अहम है। मोबाइल, टीवी, कंप्यूटर, फ्रिज, एसी और पंखे जैसे उपकरणों की कीमतों में 10 से 15 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। जहाजों के रूट बदलने और परिवहन लागत में 20 से 40 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी के कारण इन उत्पादों की लागत बढ़ रही है, जिसका बोझ अंततः उपभोक्ताओं को उठाना पड़ेगा।
निर्माण और उद्योग क्षेत्र पर भी इसका गहरा असर पड़ने वाला है। स्टील और मशीनरी की कीमतों में बढ़ोतरी से मकान निर्माण महंगा हो जाएगा। छोटे उद्योगों के लिए यह स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण हो सकती है, क्योंकि उनकी लागत बढ़ेगी और मुनाफा घटेगा। इससे रोजगार के अवसरों पर भी असर पड़ सकता है, जो पहले से ही आर्थिक दबाव झेल रहे हैं।
स्वास्थ्य क्षेत्र भी इस महंगाई की मार से बच नहीं पाएगा। भारत में फार्मा उद्योग कच्चे माल के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर है। यदि कच्चे माल की कीमतें बढ़ती हैं, तो दवाइयों के दाम भी 5 से 15 प्रतिशत तक बढ़ सकते हैं। इसके अलावा, प्लास्टिक और पैकेजिंग सामग्री महंगी होने से दूध, बिस्किट और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में भी वृद्धि होने की संभावना है।
यह पूरा परिदृश्य इस बात की ओर इशारा करता है कि वैश्विक घटनाएं किस तरह स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती हैं। आम आदमी के लिए यह स्थिति चुनौतीपूर्ण होती जा रही है, क्योंकि उसकी आय में उतनी तेजी से वृद्धि नहीं हो रही, जितनी तेजी से खर्च बढ़ रहा है। ऐसे में परिवारों को अपने बजट को फिर से संतुलित करना पड़ रहा है और कई बार आवश्यक खर्चों में कटौती भी करनी पड़ रही है।
विशेषज्ञों का मानना है कि यदि हालात जल्द सामान्य नहीं होते, तो महंगाई और अधिक बढ़ सकती है। सरकार के लिए यह एक बड़ी चुनौती है कि वह इस स्थिति से निपटने के लिए प्रभावी कदम उठाए और आम जनता को राहत देने के उपाय खोजे। फिलहाल, यह साफ है कि खाड़ी में चल रही जंग का असर अब केवल सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सीधे लोगों की थाली और जीवनशैली को प्रभावित कर रही है।

मानवीय भावों का जीवंत दस्तावेज है कविता

डॉ. एस.डी. वैष्णव (उदयपुर)

जो नहीं कहा गया उसे कहना ही कविता है। कविता जब हमारे समाज और समय से जुड़ती है तब अपने असल मुकाम पर पहुँचती है। कविता उस मनुष्य की खोज करती है जिसके हिस्से का आकाश बहुत छोटा है। प्लेटो ने कहा कि, 'कविता इतिहास से बढ़कर सत्य के अधिक निकट है।' कविता कल्पना लोक से बढ़कर जब अपनी भाव-भूमि यथार्थ के लिए संरक्षित करती हैं तब वह और ज्यादा मुखरित हो उठती है। विमर्शों की तमाम वैश्विक त्रासदियों के बावजूद कविता सदैव मनुष्यता के साथ खड़ी रही है। बेल हुक्स लिखते हैं कि, 'कविता विलाप के लिए उपयोगी स्थान है। कविता ऐसी जगह है, जहाँ हम रो सकते हैं।' यानी हम अपने भीतर के संसार में जो उथल-पुथल है, उसे त्याग कर नवीन संसार का पुनर्निर्माण करते हैं।

यूनेस्को ने 21 मार्च, 1999 को विश्व कविता दिवस या विश्व काव्य दिवस के रूप में मनाने का ऐलान किया तब से विश्वभर के साहित्यकारों और पुस्तक प्रेमियों द्वारा इस दिन को बड़े हर्ष के साथ मनाया जाता रहा है। विश्व कविता दिवस मनाने का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर रचनाधर्मिता को बढ़ावा देना और कविता के माध्यम से लोगों के जीवन में सकारात्मक विचारों का संप्रेषण करना तथा उनके लेखन-प्रकाशन, अध्ययन-अध्यापन के वितान का दायरा बढ़ाना है।

भारतीय साहित्य में आलोचकों की एक बड़ी परंपरा रही है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'कविता क्या है?' निबंध में लिखते हैं, 'कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य की भावभूमि पर ले जाती है। इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोकसत्ता में लीन किए रहता है।' इधर समकालीन कवि 'धूमिल' कहते हैं, 'कविता शब्दों की अदालत में मुजरिम के कठघरे में खड़े बेकसूर आदमी का हलफनामा है। कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है।' आशय स्पष्ट है कि कविता हमेशा मनुष्यता की पक्षधर रही है और हमारे मनोभावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है।

मध्यकालीन धार्मिकाडम्बर की प्रतिक्रिया में कबीर ने 'राम नाम सूँ प्रीति करि' के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म की परिकल्पना की, तो तुलसी ने अपने काव्य में लोकमंगल की कामना का स्वर मुखरित किया। 'मानस' की प्रति प्रमाण है एक आदर्श लोकमंगल का। रीतिकालीन कवि घनानंद प्रेममार्ग के प्रवीण और धीर पथिक बनकर आए, जहाँ एकांगी प्रेम में सुजान की निष्ठुरता से द्रवित होकर उनका हृदय चित्कार भर उठता है- 'तब हार पहार से लागत है, अब आनि कै बीच पहार परे।'

हिंदी कविता की बात करूँ, तो उसकी लंबी कालावधि में कई कवियों ने अपनी कविताई में मनुष्य की पीड़ा, प्रेम, विरह, प्रकृति और सौंदर्य को नाना रूपों में गढ़ा है। समय की डगर पर कविता का सौंदर्य इसी में निहित है कि वह कदम-दर-कदम मनुष्यता की वकालत करती रहे। कविता का प्रभाव इतना व्यापक होता है कि वह जीवन संघर्ष से निराश हो चुके लोगों में भी उत्साह का नया संचार करती है, नई उम्मीद भरती है। वह अपने समय से तो मुठभेड़ करती ही है, कभी-कभी उस सीमा से भी अतिक्रमण कर जाती हैं।

कविता हमारे मनोभावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। कविता की शुरुआत से लेकर आज तक जीवन का हर रंग-ढंग शब्दों के माध्यम से कविता में स्पंदित होता रहा है। आधुनिकता के टकराव से छिन्न-भिन्न हो रहे मानवीय भावों का जीवंत दस्तावेज भी है कविता। आजकल बड़े-बड़े राजनेता और कई अच्छे वक्ता भी अपनी बात शुरू करते समय और कभी-कभी बीच-बीच में और वक्तव्य के अंत में भी कविताओं का बड़ा सार्थक प्रयोग करते हैं। यह एक तरह का मारक प्रयोग होता है। क्योंकि कविता हमारे भीतर अंतस तक पैठ करती हैं। एक बार सीढ़ियाँ चढ़ते हुए जवाहरलाल नेहरू का पैर फिसल गया। तब पीछे खड़े कवि दिनकर ने उन्हें सहारा दिया और कहा, 'राजनीति जब-जब फिसलने लगेगी, कविता उसे इसी तरह गिरने से बचा लेगी।' यह कविता की ही हिमाकत होती है कि वह राजनीति से भी लोहा लेने को तत्पर रहती हैं। कवि सुदामा पांडे का अंदाज-ए-बयाँ देखिए- 'अपने यहाँ संसद तेली की ऐसी घानी है, जिसमें आधा तेल आधा पानी है।'

हिंदी नवजागरण में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपने काव्य में भक्ति व नीति से भिन्न, 'हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी' से राष्ट्रीयता एवं भारतीय संस्कृति के गौरवगान को लेकर आए। छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' में विश्व समरसता का मंत्र फूँकते हैं तथा रीतिकालीन मांसलता एवं सूक्ष्मता से भिन्न आनंदवाद से प्रेरित हो, नारी के आंतरिक सौंदर्य को इस तरह व्यक्त करते हैं, 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पगतल में/ पीयूष स्त्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।'

मुक्तछंद की अवधारणा लेकर आए कवि निराला ने इलाहाबाद के पथ पर भरी दुपहरी में पत्थर तोड़ती, पसीने में तर-बतर एक विधवा स्त्री का करुण चित्र खींचा, तो महादेवी ने 'मैं नीर भरी दुख की बदली' बनकर अपनी विरह की पीड़ा को अलौकिक सीमा तक पहुँचाया।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद कविता नए भावबोध की अभिव्यक्त, अनुभूति की सच्चाई और यथार्थवादी दृष्टि के साथ लोक संपर्क से जुड़कर, नयी उपज लेकर हमारे सामने आती है। जब कविता के उपमान मैले होने लगे तब कवि मुक्तिबोध अपनी इस्पाती दस्तावेज कविता 'अंधेरे में' लिखते हैं- 'हमें अभिव्यक्ति के खतरे उठाने ही होंगे।' और इधर अरुण कमल का कवि हृदय बोल उठता है- 'अपना क्या है इस जीवन में /सब तो लिया उधार/ सारा लोहा उन लोगों का/ अपनी केवल धार।'

आजादी के बाद भारतीय समाज अपनी यात्रा के मुख्य पड़ावों में जिन बाह्य और अंदरूनी परिवर्तनों का शिकार हुआ, उन्हें गहराई में जाकर रेखांकित करती हैं कविता। समय बदला। उसके साथ कविता का स्वरूप भी बदला। कवियों ने अपने समय की विषमताओ-विडंबनाओं तथा व्यवस्था-अव्यवस्था के बीच झूलते मनुष्य की पीड़ा और संघर्ष को अपनी कविताओं का हिस्सा बनाया। युवा कवि कुमार अनुपम समय की नब्ज को कुछ इस तरह पकड़ते हैं- 'सविता बहिनी की शादी/ अफजल भाई के घर वलीमा एक ही दिन था/ यह कोई 92 की रात थी/ किसी धमाके का इंतजार दोनों तरफ हुआ।'

आज के कवियों में मामूली चीजों पर गैर मामूली कविताएँ रचने वाले लोकधर्मी कवि माधव नागदा 'कवि की कामना' इस रूप में करते हैं- कवि/ रच पाता है कविता/ क्योंकि/ वह नहीं है संत/ कामना है उसकी/ कुंडलिनी चाहे न जगे/ मनुष्य में सदा/ जगी रहें संवेदनाएँ।' उनकी ही एक कविता है 'बचा रहे आपस का प्रेम' उसकी बानगी देखिए, 'पेड़ ही तो है कविता/ इस झुलसाने वाले समय में/ कविता से इतर/ छाँव कहाँ! सुकून कहाँ!'

आज के दौर में युवा कवियों की एक लंबी फेहरिस्त है। वे अपने अनुभव और अनुभूति को शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं। उनके यहाँ प्रेम है, विमर्श है, अलगाव है, द्वंद्व है, मुद्दे हैं, बहस है, आक्रोश है, नया विचार है, यानी इस सदी का समग्र परिदृश्य झाँकता नज़र आता है। युवा कवि हेमंत मेनारिया समय की नब्ज को कुछ इस तरह पकड़ते हैं- 'यूं तो झर जाते हैं पतझड़ में सभी पत्ते/ पर जो रह जाते हैं शेष/ उनसे पूछना कभी / कि खामोश दरख्तों के मिज़ाज क्या है?' प्रेम में पड़ी स्त्री का प्रतिबिंब खाकसार की कविता में कुछ इस तरह आया है- चाँद खिला था तुम्हारे चेहरे में उपमान बनकर/ और कभी-कभी खिलता था अमलतास/ अपने पूरे प्रखर जाफरानी वेग से/ कनक चंपा-सी अर्द्धरात्रि के स्वप्नों में/ रजत पहर में बहती थी तुम/ कि जैसे/ दहक उठा हो/ जंगल-जंगल पलाश।'

कहना चाहिए कि इस मशीनी युग में कविता मनुष्यता के पक्ष में खड़ी रहे और एक बेहतर समाज का ख्वाब बुनती रहे, यही उसका सहज सौंदर्य है। समय के दस्तावेजों पर कविता सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रही है। रश्मिरथी से दिनकर की कविता के अंश के साथ अपनी बात खत्म करूँगा, 'है कौन विघ्न ऐसा जग में / टिक सके आदमी के मग में? खम ठोंक ठेलता है जब नर/ पर्वत के जाते पाँव उखड़/ मानव जब जोर लगाता है/ पत्थर पानी बन जाता है।' उम्मीद है, काव्य की भूमि पर खड़े होकर हम सब मनुष्यता के लिए नित नए स्वप्न तलाशती कविताएँ रचते रहेंगे, और कविताई से दुनिया जहान में प्रेम-मोहब्बत के नए रंग भरते रहेंगे।

जिन्दा रखें 'आग'

राजेश ओझा गोण्डा (उ०प्र०)

बात होली के दिन की है। मैं होलिका को ताप ही रहा था कि पड़ोस की एक दादी ने आकर होलिका से आग निकालना शुरू कर दिया। बगल बैठे एक किशोर ने दादी से कहा- यह क्या है दादी? यहाँ से आग क्यों ले जा रही हो आप? दादी मेरी तरफ देखकर मुस्कायीं और बिना उसे कोई उत्तर दिए ही चली गयीं। मुझे अपना बचपन याद आया। जब पड़ोस की दाई अक्सर मेरे घर आकर दादी से कहती थीं- दुलहिन अगही हौ? अगही मतलब अग्निवान। जिसके धन होता है तो वह धनवान होता है, शायद उसी तर्ज पर 'अगही' शब्द का प्रयोग होता था तब। दादी तुरंत हंसकर कहती थीं- हां दाई! अब अतना लापरवाह थोरै हन। हम पूरा साल होली कै आग जोगइत है,औ जब ढुंढ़ेहरी पर होलिका से नयी आगि लाइत है तब्बै पिछले साल वाली आगि कै पीछा छोड़ित है।

मैं कभी-कभी झुंझलाकर बड़की अम्मा (दादी) से कहता भी था- काहे इनका परकाए हौ आप? रोज मूड़ उठाय कै आय जाति हैं मांगै।

दादी मुझे डाँट देती थीं- आगि कब्बौ नाहीं नाई कीन जात है। ढुंढेहरी कै आगि मां बड़ी सकती होति है।

आग देने को मना कोई भी नहीं करता था। एक नियम था कि होलिका से आग लाओ और उसे घर में पूरा वर्ष जिन्दा रखो। आग बुझनी नहीं चाहिए। ऐसा नहीं था कि उस समय माचिस का आविष्कार नहीं हुआ था इसलिए आग सम्हाल कर रखी जाती थी या मांगी जाती थी। माचिस तो बहुत बाद में आयी होगी। आग के और साधन अवश्य रहे होंगे। जब आदि मानव पत्थर रगड़ कर आग पैदा कर ले रहा था तब चेतना सम्पन्न व्यक्ति ने तो अवश्य माचिस का विकल्प तलाश रखा होगा। जैसे जब सड़कें नहीं थीं व्यक्ति तब भी घर से बाहर निकलता था। जैसे सड़कों का इतिहास व्यक्ति के प्रथम बार घर से बाहर निकलने से जुड़ा है उसी तरह अग्नि को पैदा करने का भी कोई न कोई इतिहास अवश्य होगा। मैं घर के पिछवाड़े एक बुजुर्ग दलित को अक्सर सुबह लुकाठी से बीड़ी जलाते देखता था। आग सिर्फ उसे नहीं दिया जाता था जिसका आचरण बहुत गन्दा हो। तभी की बनी एक कहावत आज भी हमारे गाँव में जिन्दा है- तोहार जौन चाल-चलन है कि मांगे आगि न पइबौ।

समाजशास्त्रियों ने लोक के मस्तिष्क में आग न देने को एक सामाजिक अपराध के रूप में स्थापित कर दिया था।

हम सबका जीवन पांच तत्वों से मिलकर बना है। मानस में बाबा तुलसी कहते हैं–क्षिति,जल,पावक,गगन,समीरा,पंच

तत्व रचि अधम शरीरा इन पांचों तत्वों में अग्नि सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। हालांकि विज्ञान शास्त्री कहते हैं कि शरीर संरचना के लिए अन्य तत्वों की अपेक्षा अग्नि तत्व का उपयोग बहुत कम होता है लेकिन इसका महत्व हमारे जीवन में अत्यधिक है। यह अग्नि ही है कि इसके गायब होते ही शरीर ठण्डा हो जाता है। सब कुछ समाप्त हो जाता है।

ताप का प्रभाव हमारे जीवन के लिए कितना आवश्यक है यह बिना सूर्य के जीवन जीने की कल्पना करिए। बिना सूर्य के ताप से किसी का भी जीवन संभव नहीं। चाहे मनुष्य हों, पशु हों या फिर वनस्पतियाँ। सूर्य का ताप चाहिए ही चाहिए। बिना इसके स्वस्थ जीवन संभव नहीं है। अब प्रश्न है- सूर्य क्या है? आपका उत्तर आएगा 'आग का गोला' मतलब अग्नि ही हमारी बुनियादी ईंधन है। यह अग्नि ही है जो हमारे खाए हुए को पचाता है और स्वस्थ रखता है। इसे ही हम जठराग्नि कहते हैं। अग्नि के ताप से ही हमारा कुनबा बढ़ता है। जबतक जननेन्द्रियां गर्म हैं तब तक ही प्रजनन संभव है। यह पूर्णतः प्राकृतिक है। चूंकि मनुष्य प्रज्ञा वान हो गया और उसने तमाम विकल्प तलाश लिए लिए लेकिन पशु आज भी पूर्णतः प्रकृति पर ही निर्भर हैं। कामाग्नि जैसे ही उन्हें गर्म करती है वे छटपटाने लगाते हैं।

अग्नि एक ऐसी ऊर्जा प्रदान करती है जिससे जीवन प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने लगता है। मस्तिष्क में चित्ताग्नि की उपस्थिति से व्यक्ति प्रज्ञावान बनता है। हां यह अवश्य है कि प्रकृति समानुपात रूप में किसी को कुछ नहीं देती। सभी व्यक्ति समान रूप से स्वस्थ नहीं होते। सभी समान रूप से सुन्दर या कुरूप नहीं होते। क्षमता मूलक अन्तर के साथ प्रकृति अपना सृजन करती है। इसी अनुरूप सभी में समान रूप में चित्ताग्नि नहीं होती। लेकिन होती सभी में है। यह चित्ताग्नि ही है जो हमें पशुवत आचरण से रोकती है।

सनातन धर्म में अग्नि को देवता माना गया है। पृथ्वी पर सनातन ही एक ऐसा धर्म है जो हमें प्रत्येक उस तत्व के प्रति कृतज्ञ होना सिखाता है जो जीवन जीने में सहायक हैं। सनातन धर्म में वृक्ष की पूजा होती है, पर्वत की पूजा होती, पशु की पूजा होती है, पक्षी की पूजा होती है, वायु की पूजा होती है। सनातन धर्म का मूल स्वभाव आभार का है। फिर यह अग्नि को कैसे छोड़ सकते थे। सनातन ने अग्नि की भी पूजा शुरु की। अग्नि देव की सवारी क्रुद्ध भेड़ है।

भारतीय संस्कृति में अग्नि जीवन के सभी आयाम के लिए बहुत आवश्यक है। कोई भी पूजा-पाठ बिना अग्नि के पूर्ण नहीं हो सकता है। हवन करना है तो अग्नि चाहिए। यज्ञ करना है तो अग्नि चाहिए। विवाह में बिना अग्नि के फेरे नहीं होते। सनातन धर्म का कोई भी संस्कार बिना अग्नि के पूर्ण नहीं हो सकता। अन्त में दाह-संस्कार करके अग्नि अपने सभी दायित्व को पूर्ण करती है।

सनातन ने होलिका की अग्नि को पूरे वर्ष जिन्दा रखने का जो धार्मिक नियम बनाया था वह पूर्णतः आध्यात्मिक तो था ही, उसके पीछे कहीं न कहीं यह संदेश भी था कि अग्नि के बिना जीवन संभव नहीं है। न परोक्ष रूप में न ही अपरोक्ष रूप में। अग्नि हमारे अन्दर ऊर्जा भरती है। हमें प्रज्ञवान बनाती है, इसे बुझने नहीं देना है। समाज विज्ञानियों ने सामाजिक नियम बना दिया था कि यदि किसी लापरवाह के यहाँ अग्नि बुझ गयी तो उसे अपनी आग में से थोड़ी सी आग दे देना है। आग सिर्फ उसे नहीं दी जाती थी जो समाज के नियमों के प्रति पाबन्द नहीं था। बाकी आग प्रत्येक व्यक्ति के घर में राख के नीचे दबाकर जिन्दा रखी जाती थी। उसी बात को आज प्रतीक रूप में कहा जाता है– 'राख हटाओ चिंगारी निश्चित दिखेगी।'

आज जब दुष्यंत को पढ़ता हूँ-

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़्सद नहीं ,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं, तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

तब सोचता हूँ कि मेरे यहाँ के समाज विज्ञानियों ने पूरे वर्ष घर में आग जिन्दा रखने का नियम सिर्फ माचिस बचाने के लिए कंजूसी हेतु नहीं बनाया होगा। कहीं न कहीं वे इस बहाने आग को मस्तिष्क में भी जिन्दा रखना चाहते थे। दुष्यंत आग को विद्रोही स्वभाव में देखते हैं। वे समाज में एक ऐसी ज्वाला लाना चाहते हैं जो समाज के विगलित रूपों को जलाकर राख कर दे। दुष्यंत आग के बहाने क्रांति की बात करते हैं। इस तरह यह स्पष्ट है कि आग एक ऐसी ऊर्जा जो आपको निरंतर तैयार रखती है। इसे सदैव जिन्दा रखना है।

(कविता)

परदेश और गाँव

प्रभुनाथ शुक्ल

अम्मा ने परदेश जाते समय
सफर की भूख मिटाने को दिया था
गुड़ की भेलियां, अचार की फारियां और
साथ में भरपूर रोटियां

घर से निकलते बोली थीं अम्मा
जरा, दही-गुड़ से मुँह झूठा कर ले
बस! यह कहते अम्मा की आँखें
बन गई थीं सावन-भादों की नदी

किवाड़ की ओट से वह फूट-फूट कर रोई
अजीब चुप्पी ओढ़े बेचारी छुई-मुई सी
आँखें उसकी झील सी बन गई
दरवाजे पर खड़ी वह कील सी गड़ गई

बाबू जी, ने मुझे आलिंगन में भर लिया
फिर अचानक मुँह से गुब्बार फूट पड़ा
टूटी खाट पर वह निढाल हो गए
बस, मेरी राह देखते वे बेहाल हो गए

स्टेशन से अब चल पड़ी थी रेल
नम थीं आँखें और जिंदगी का खेल
सबकी आँखों में था अजीब सा ग़म
किसी का ग़म न किसी से था कम

सफर में कोई न अपना हम सफर था
भागती रेल और अपना अंतर्द्वंद था
टूटी छप्पर और बहन की शादी का गम था
छोटू को अफसर बनाने का भी मन था

शहर को जिया तो वे सपने दिन में टूट गए
जो थे अपने उनके भरोसे भी रूठ गए
भूख थीं गाफिल और छत भी लूट गए
मतलबी शहर में सपने भी लुट गए

शहर से लौटा बेआबरू और बेजार
गगनचुम्बी इमारतें का बस इश्तहार
भूख मिटाने तक को न मिली रोटियां
जिस्म से शिकायत करती रहीं अतडियां

सड़क को सिर पर रख लौटा गाँव
माँ ने भींच लिया आलिंगन की ठाँव
बाबू की बाहों ने जैसे जकड़ लिया गाँव
लूटे सपनों संग पहुँचा झोपड़ी की छाँव

बकरियां मिमीआई और गइया भी रम्भाई
भागी–दौड़ी आई छोटी और छूटका भाई
पाँव के छाले को निहारती छूटकी माई
बोली भौजाई तू न जाना शहर हरजाई

पिता

पिता की छत्रछाया में सारा जीवन निखरता है,
पिता का साथ जो ना हो, तो सारा जीवन बिखरता है।
तन-मन-धन से है जिसने अपना परिवार पाला है,
पसीना-खून देकर के, हमें हरदम संभाला है।
मौसम कोई भी हो न बदले वो कभी काया,
मुसीबत खुद पे लेकर के, बना हर पल मेरा साया।
ख्वाहिशें करके पूरी वो सभी के हो गया बड़ा,
दबाकर अपने सपनों को, पलटकर वो नहीं मुड़ा।
नर्मी आँखों की उसके ना कभी देखा किसी ने भी,
छुपा लेता था वो आँसू, बारिश और पसीने से।
सभी रिश्ता निभाया है पति, बेटा, पिता बन के,
भाई से बना माई, रहा जलता सती बन के।
ढलकर सभी के ग़म हमें चलना सिखाया है,
पढ़ाया और लिखाया है, हमें जीना सिखाया है।
अंबर सी देकर हमें छाया हर ग़म से बचाया है,
जप-तप करके ही उसने, हमें चलना सिखाया है।
पिता के त्याग की कोई क्यों पहचान नहीं होती?
दर्द उनका भी गहरा है, सांसें उनकी भी आसान नहीं होती!

— विभा रू. द्विवेदी 'वीर'

कस्तूरी कुंडल : एक युद्ध नाद

शालिनी श्रीवास्तव नई दिल्ली

कस्तूरी जैसी प्रकृति का दोहन इस गति से हो रहा है कि ऐसा लगता है कि कस्तूरी की महक सदा के लिए चली जाएगी। सुरेश हंस का यह चौथा उपन्यास 'कस्तूरी कुण्डल' पढ़ते हुए इसी एक बात ने मेरी सोच को बुरी तरह जकड़ लिया है। कस्तूरी कुण्डल एक कंदील है जिसकी रौशनी में हम स्वयं को पढ़ पाते हैं। आज हम विकास की जिस अंधी दौड़ में लगे हुए हैं, उसने हमें वास्तव में अँधा बना दिया है। हम यह भी नहीं जान पाते कि जिस शाख पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं। यह उपन्यास एक दृष्टि है जिसके माध्यम से हम पेड़, कुल्हाड़ा, लोभ, राजनीति, टूटन, विस्थापन, और जंगलों का सफाया, धरती की नसों में फैलता जहर, उजड़ते उखड़ते आदिवासी, साफ़ होते जंगल, बेघर होता हाशिये का आदमी, जंगली जीव जंतु और विस्थापन का दर्द झेलते विवश आदिवासी, प्रतिरोध की लड़ाई लड़ते युवा, जैसे जाने कितनी ही पीडाओं का दस्तावेज़, सब देख पाते हैं। पाठक के सामने पृष्ठ दर पृष्ठ खुलता जाता है।

कहानी राजस्थान के कबीले मांगणयारों के विस्थापित होने से शुरू होती है। आदमी को जब अपने अस्तित्व का अहसास हो जाता है तो बस वह उसी की लड़ाई लड़ता है। इस कबीले के युवा मंदर को किसी की दया पर जीना मंजूर नहीं। वह खुद्दारी की गाथा लिखना चाहता है। कबीले के युवा की हत्या के प्रतिरोध में गाँव के चालीस परिवार घर

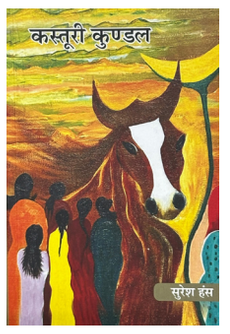

बार छोड़ कर स्वाभिमान से जीने के संकल्प के साथ देश में अलग अलग दिशाओं में चले जाते हैं। यहीं से मंदर का संघर्ष प्रारंभ होता है। दिल्ली जैसे महानगर जहाँ हर साल हजारों लोग जीवन यापन के लिए आते हैं और दिल्ली के ही हो कर रह जाते हैं। उपन्यास की मुख्य कथा यहीं एक परिवार के माध्यम से अपना विस्तार पाती है। परिवार में एक बूढी महिला अपने चार बेटों के साथ एक हवेली में रहती है। उसे सब लोग अम्मा कह कर पुकारते हैं। रेगिस्तान से भटकता हुआ मंदर भी इसी परिवार में नौकर की भूमिका में आ जाता है। चारों बेटों की बहुएं और बच्चे हैं। पति की मृत्यु हो चुकी है, जो अपने पीछे अम्मा के नाम करोड़ों की संपत्ति छोड़ गए हैं। अम्मा एक आश्रम चलाती हैं जहाँ समाज से प्रताड़ित स्त्रियाँ आश्रय ही नहीं पाती बल्कि अपना पूरा जीवन वहीं रह कर व्यतीत करती हैं। जिस समाज से दुत्कारी गईं, वे तमाम स्त्रियों ने फिर कभी उस तथाकथित सभ्य समाज की तरफ फिर कभी रुख नहीं करती। आश्रम में रहती महिलाएं पूरी तरह आश्रम पर ही निर्भर हैं। यहाँ लेखक प्रत्यक्ष विपणन (डायरेक्ट खेती) का उदहारण प्रस्तुत करते हुए कथा को आगे बढ़ाता है। वे स्त्रियाँ फसल भी वही उपजाती हैं और बिक्री भी खुद ही करती हैं। आश्रम की गौशाला से दूध, दही और पनीर मिल जाता है। एक तरफ आयुर्वेदिक दवाओं के लिए जड़ी बूटियों की जैविक खेती करती हैं। आश्रम में आयुर्वेदिक दवाखान भी स्त्रियाँ ही चलाती हैं। आश्रम में पुरुष वर्जित हैं।

यहाँ संकट तब खड़ा हो जाता है, जब कोई प्राइवेट कम्पनी सरकार की मिली भगत से आश्रम वाली जगह पर एक कारखाना लगाना चाहती है। आश्रम में जीवन यापन करने वाली तमाम महिलाओं के सामने संकट खड़ा हो जाता है। अम्मा यह हरगिज़ नहीं होने देना चाहती। तमाम स्त्रियाँ इसका प्रतिरोध करने के लिए एक युद्ध स्तर की तैयारी में जुट जाती हैं और अंत तक सत्ता के खिलाफ़ खड़ी दिखाई देती हैं। यह लड़ाई केवल उन बेसहारा स्त्रियों के आशियाना उजड़ने की कहानी नहीं है, अपितु उस आश्रम में हजारों पेड़ों को कटने से बचाने की लड़ाई है। पेड़ों पर लम्बे समय से रह रहे पंछियों के घोंसलों के उजड़ने की कथा है। वक्त ऐसा भी आ जाता है कि अम्मा की संतान भी लालच में बिक जाती है और अपनी माँ का सौदा कर डालती है। अम्मा और उसकी वीरांगनाएँ आश्रम को तोड़ने और जंगल को साफ़ करने के लिए आई विकराल पीले पंजे वाली मशीनों के सामने आ डटती हैं। यहाँ तक आते पाठक खुद को आश्रम के हक़ में देखने लगता है। यही उपन्यास का शिखर है। सुरेश हंस के इस उपन्यास को मैं हिंदी के बेहतरीन उपन्यासों में देखती हूँ। उपन्यास एक युद्ध नाद है। वह नाद जो पाठक की संघर्ष चेतना को ही नहीं जगाता अपितु उस वस्तु स्थिति को बदल देना चाहता है। उपन्यास पाठक के सामने एक से एक भयावह स्थितियां पैदा करता है और उनसे जूझने के लिए प्रेरित भी करता है। हिन्दू मुस्लिम में साम्प्रदायिक दूरियां नफरत में बदलती सी दिखाई देती हैं। इसमें कहीं कहीं वर्तनी की त्रुटियाँ छूट गई हैं उम्मीद है अगले संस्करण में अवश्य दूर हो जाएंगी। कुल मिला कर उपन्यास न केवल पठनीय है, बल्कि संग्रह करने लायक भी है।

मालिक जयेश जग्शी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी है, न्याय क्षेत्र मुंबई) कार्यकारी संपादकः अरविंद मिश्रा, सहसंपादकः सुजीत मिश्रा (दै.'राष्ट्रीय स्वाभिमान 'में सभी लोग सहयोगात्मक और अवैतनिक तौर पर कार्यरत हैं)
● आर.एन.आई.:MAHHIN/2008/24084 ● ईमेलः rastriyaswabhiman@gmail.com ● भ्रमणध्वनि क्र. +919224733113

ई-चालान बना शिकंजा: 'नो पार्किंग' की गलती ने शातिर अपराधी को पहुंचाया सलाखों के पीछे

उल्हासनगर में सामने आए एक चौंकाने वाले मामले ने यह साबित कर दिया है कि तकनीक और पुलिस की सतर्कता मिलकर कैसे बड़े अपराधियों को भी पकड़ सकती है। एक मामूली 'नो पार्किंग' का ई-चालान जहां आमतौर पर लोग नजरअंदाज कर देते हैं, वहीं इस बार यही छोटा सा संदेश एक बड़े अपराध का खुलासा करने का कारण बन गया। गोवा से चोरी हुई मोटरसाइकिल और ठाणे जिले के कुख्यात अपराधी की गिरफ्तारी की कहानी किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं है, जिसमें हर मोड़ पर नया खुलासा होता गया। यह पूरा मामला तब सामने आया जब एक बाइक मालिक को अचानक ई-चालान का मैसेज मिला। यह मैसेज 'नो पार्किंग' नियम के उल्लंघन का था, लेकिन हैरानी

की बात यह थी कि जिस बाइक का चालान कटा था, वह पहले ही गोवा से चोरी हो चुकी थी। ऐसे में मालिक के लिए यह संदेश किसी झटके से कम नहीं था। उसने तुरंत पुलिस से संपर्क किया और मामले की जानकारी दी। यहीं से शुरू हुई एक ऐसी जांच, जिसने न केवल चोरी की गाड़ी का पता लगाया, बल्कि एक खतरनाक अपराधी को भी बेनकाब कर दिया। उल्हासनगर ट्रैफिक पुलिस में तैनात कांस्टेबल संतोष भोइर की सूझबूझ इस पूरे मामले में सबसे अहम साबित हुई। उन्होंने इस ई-चालान को सामान्य घटना मानकर नजरअंदाज नहीं किया, बल्कि इसकी गहराई में जाकर जांच शुरू की। तकनीकी सर्विलांस और ट्रैकिंग के जरिए यह पता लगाया गया कि चोरी की गई बाइक इस समय उल्हासनगर इलाके में चलाई जा रही है। इसके बाद पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए आरोपी के ठिकाने का पता लगाया और उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान लक्ष्मण उर्फ आदित्य तुकाराम घुडे के रूप में हुई है, जो ठाणे जिले के मुरबाद क्षेत्र का निवासी है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, वह कोई साधारण चोर नहीं, बल्कि एक बेहद शातिर और खतरनाक अपराधी है। उसके खिलाफ किन्हावली और मुरबाद पुलिस थानों में हत्या और हत्या के प्रयास सहित कुल 26 गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। यह तथ्य इस मामले को और भी गंभीर बना देता है कि आरोपी लंबे समय से पुलिस से बचता फिर रहा था और कई मामलों में वांछित था। पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी करीब 8 से 10 मामलों में फरार चल रहा था और लगातार अपनी पहचान छिपाकर अलग-अलग स्थानों पर रह रहा था। गोवा से चोरी की गई हीरो स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल को वह बेखौफ होकर ठाणे जिले में चला रहा था, मानो उसे कानून का कोई डर ही न हो। लेकिन एक छोटी सी ट्रैफिक गलती ने उसकी सारी चालाकी पर पानी फेर दिया और वह पुलिस के हत्थे चढ़ गया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की मोटरसाइकिल बरामद कर ली है, जिसकी कीमत लगभग 60 हजार रुपये बताई जा रही है। इसके अलावा, उसके खिलाफ उल्हासनगर पुलिस थाने में नई धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अब इस बात की भी जांच कर रही है कि आरोपी ने इस बाइक का उपयोग किन-किन गतिविधियों में किया और क्या वह किसी बड़े अपराध की योजना में शामिल था।

संजय गांधी नेशनल पार्क बचाओ नहीं तो शहर का दम घुट जाएगा

ठाणे। मुंबई-ठाणे का 'दिल' कहा जाने वाला संजय गांधी नेशनल पार्क आज गंभीर खतरे के कगार पर है। यह ग्रीन सैंक्चुअरी, जो कभी करीब 104 स्क्वायर किलोमीटर में फैली थी, दिन-ब-दिन सिकुड़ती जा रही है और इंसानी दखल के कारण इसका दायरा कम होता जा रहा है।पर्यावरणविद डॉ प्रशांत सिनकर ने वर्ल्ड फॉरेस्ट डे के मौके पर एक बार फिर इस चिंताजनक सच्चाई की ओर ध्यान दिलाया। शहर के तेजी से हो रहे डेवलपमेंट के चक्कर में यह नेचुरल 'फेफड़ा' दम घुटने लगा है, जिसका सीधा असर यहां की रिच बायोडायवर्सिटी पर पड़ रहा है।यह पार्क तेंदुए, हिरण, खरगोश, अलग-अलग तरह के सांपों और सैकड़ों पक्षियों का घर है। हालांकि, जैसे-जैसे जंगल का एरिया कम होता जा रहा है, उनके रहने की जगहों पर खतरा मंडरा रहा है। नतीजतन, वाइल्डलाइफ शहर की ओर बढ़ रहे हैं और इंसान-वाइल्डलाइफ टकराव की घटनाएं बढ़ रही हैं। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, यह सिर्फ़ वाइल्डलाइफ़ का संकट नहीं है, बल्कि पूरे इकोलॉजिकल बैलेंस के बिगड़ने की चेतावनी है।स्थानीय नागरिकों और पर्यावरणविदों के मुताबिक, कुछ इलाकों में, राजनीतिक रूप से समर्थित बिल्डर लॉबी और लैंड माफिया पार्क की सीमाओं पर कब्ज़ा कर रहे हैं। बफ़र ज़ोन धीरे-धीरे कम हो रहा है, जिससे जंगल के मूल हिस्से को खतरा पैदा हो रहा है। सही प्लानिंग की कमी, अपर्याप्त मॉनिटरिंग और सख्त कार्रवाई की कमी के कारण यह समस्या दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है।पार्क में पानी के स्रोतों की हालत भी चिंताजनक है। अतिक्रमण और प्रदूषण के कारण झीलें, नदियाँ और प्राकृतिक जलस्रोत सूखने की कगार पर हैं। इन पानी के स्रोतों का असर सिर्फ़ पार्क तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पूरे मुंबई-ठाणे इलाके के मौसम, बारिश और ग्राउंडवाटर लेवल पर पड़ रहा है।फ़ॉरेस्ट डे के मौके पर, पर्यावरणविदों और जागरूक नागरिकों ने एक भावनात्मक अपील की है कि, "यह सिर्फ़ एक जंगल नहीं है, यह शहर की साँस है। अगर यह हरियाली खत्म हो गई, तो आने वाली पीढ़ियों को साफ़ हवा और सुरक्षित माहौल नहीं मिलेगा।" उनका कहना है कि अतिक्रमण रोकना, बफर ज़ोन की सख्त सुरक्षा, लोकल हिस्सेदारी बढ़ाना और सस्टेनेबल डेवलपमेंट को लागू करना आज के समय की ज़रूरत है।आज वर्ल्ड फॉरेस्ट डे मनाते हुए, हमें सिर्फ़ पेड़ लगाने के बजाय, संजय गांधी नेशनल पार्क को बचाने के लिए कड़े कदम उठाने की ज़रूरत है, जो हमारी आँखों के सामने सिकुड़ रहा है। क्योंकि जंगल बचेंगे, तभी शहर बचेगा और शहर बचेगा, तभी हमारा भविष्य सुरक्षित होगा।

उल्हासनगर में चेटीचंड महापर्व पर महाबाइक रैली धूमधाम से संपन्न, जयकारों से गूंजा शहर

उल्हासनगर। सिंधी समाज के महापर्व चेटीचंड के अवसर पर उल्हासनगर शहर में भव्य महाबाइक रैली का आयोजन बड़े उत्साह और धूमधाम के साथ किया गया। भगवान झूलेलाल के जयकारों से पूरा शहर दिनभर गूंजता रहा।

हर वर्ष की परंपरा के अनुसार, चेटीचंड से एक दिन पहले आयोजित होने वाली इस महाबाइक रैली की शुरुआत शिवसेना नगरसेवक महेश सुखरामानी द्वारा की गई थी और इस वर्ष भी उनके नेतृत्व में यह रैली निकाली गई। उन्होंने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य सिंधी समाज के चेटीचंड और हिंदू समाज के चैत्र नवरात्र पर्व के प्रति लोगों को जागरूक करना है, ताकि सभी त्यौहार उत्साह और शांति के साथ मनाए जाएं।

गुरुवार, 19 मार्च 2026 को सुबह 10 बजे उल्हासनगर-1 स्थित रिजेंसी एंटीलिया में भगवान झूलेलाल के बहराणा साहिब की ज्योत प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इसके बाद भाऊ लीलाराम मंडली द्वारा भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

सुबह 11 बजे शुरू हुई यह महाबाइक रैली उल्हासनगर के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए दोपहर 2 बजे कैंप-5 स्थित कैलाश कॉलोनी में संपन्न हुई। रैली में भारत राजवानी, शंकर नागरानी, हीरो बोधा, अनिल बठिजा, महेश मूलचंदानी, सोनू विशनानी, जयराम खत्री सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

इस अवसर पर साईं वसण शाह दरबार के छोटू साईं, महापौर अश्विनी निकम, उपमहापौर अमर लुंड, पूर्व विधायक पप्पू कालानी, उद्योगपति महेश अग्रवाल, समाजसेवक बंटी कुरसेजा, उदव रूपचंदानी सहित अनेक जनप्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता भी रैली में शामिल हुए। महिलाओं और युवाओं की बड़ी टीम ने भी रैली का नेतृत्व किया।

रैली के दौरान उल्हासनगर-1 से लेकर कैंप-5 तक प्रमुख चौराहों पर व्यापारियों द्वारा श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए विशेष व्यवस्था की गई। गर्मी को देखते हुए ठंडे पेय, सोडा, जूस और प्रसाद वितरित किया गया।

पूरे दिन शहर में भगवान झूलेलाल के जयकारों की गूंज बनी रही। इसके अगले दिन चेटीचंड महापर्व भी पूरे उल्हासनगर में हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया गया।

शिवसेना नगरसेवक महेश सुखरामानी ने पुलिस उपायुक्त से की मुलाकात अवैध घुसपैठियों की जांच की मांग

उल्हासनगर। शिवसेना नगरसेवक महेश सुखरामानी ने उल्हासनगर परिमंडल-4 के पुलिस उपायुक्त सचिन गोरे से मुलाकात कर शहर में रह रहे संदिग्ध अवैध घुसपैठियों की जांच की मांग की। इस दौरान उन्होंने पुलिस उपायुक्त को एक निवेदन पत्र भी सौंपा।

महेश सुखरामानी ने कहा कि उल्हासनगर शहर में यदि कोई भी अवैध रूप से रह रहा है, तो उसकी पहचान कर विधिसम्मत कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने विशेष रूप से बरेक नंबर 628 और 631 में संदिग्ध लोगों के रहने की आशंका जताते हुए उनकी जांच करने की मांग की। उन्होंने आगे कहा कि आगामी दिनों में चेटीचंड महायात्रा और नवरात्र जैसे प्रमुख त्योहार आने वाले हैं, जिन्हें शांति और सौहार्द के साथ संपन्न कराना जरूरी है। ऐसे में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत रखना प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि किसी प्रकार की अप्रिय घटना न हो। पुलिस उपायुक्त सचिन गोरे ने उनकी बातों को गंभीरता से सुनते हुए आवश्यक जांच और उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर समाजसेवक शंकर नागरानी, राजेश अमरनानी और दीपक कुकरेजा भी उपस्थित रहे।

शराब के नशे में धुत यात्री ने होस्पेट एक्सप्रेस में हंगामा किया; रेलवे पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया

ठाणेः ठाणे रेलवे पुलिस ने बुधवार रात होस्पेट एक्सप्रेस के एक यात्री को नशे की हालत में अन्य यात्रियों को परेशान करने के आरोप में हिरासत में लिया। पुलिस ने बताया कि यात्री के खिलाफ ठाणे लोहमर्ग पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है।

शिकायतकर्ता द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के अनुसार, सीएसएमटी रेलवे पुलिस स्टेशन में कार्यरत पुलिस कांस्टेबल शुभम संजय पाटिल, 18 मार्च, 2026 की रात को ट्रेन संख्या 11139 होस्पेट एक्सप्रेस में मेल पेट्रोल ड्यूटी पर थे। जब ट्रेन सुबह लगभग 9:53 बजे ठाणे रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 7 पर पहुंची और रुकी, तो कोच संख्या S 4 में सीट संख्या 37 पर बैठा एक यात्री अपने बगल में बैठे यात्री से बहस कर रहा था।

जब शिकायतकर्ता पाटिल ने यात्री से पूछताछ की, तो उन्हें संदेह हुआ कि उसने शराब का सेवन किया है। इसी दौरान गश्त पर तैनात अन्य कर्मचारी भी मौके पर पहुंच गए। ट्रेन के कल्याण स्टेशन पार करने के बाद, यात्री को अगले कर्जत स्टेशन पर उतार लिया गया।

'फर्जी' के दूसरे अध्याय की शुरुआत: शाहिद कपूर ने खोले नए राज, बढ़ी दर्शकों की उत्सुकता

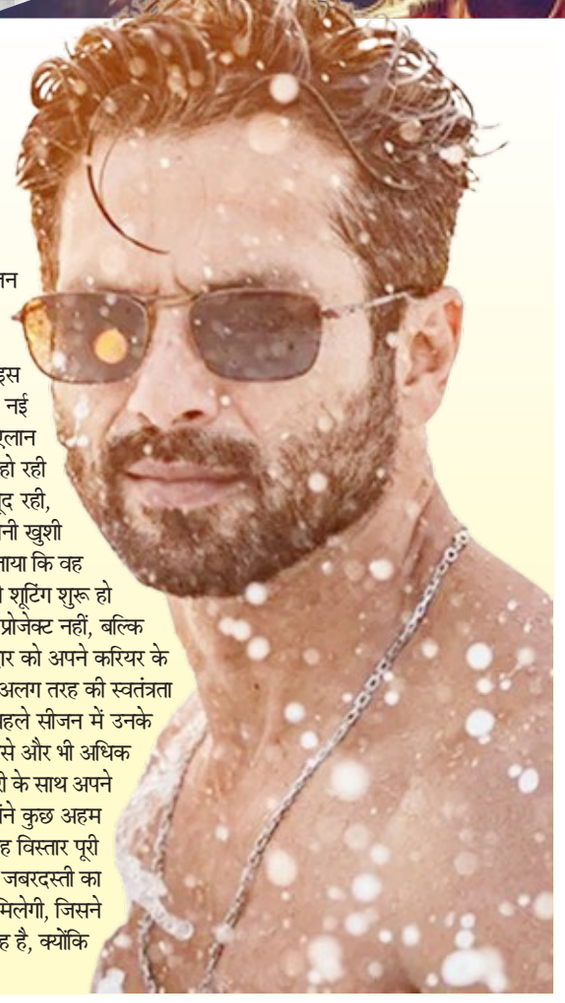

डिजिटल मनोरंजन की दुनिया में कुछ कहानियां ऐसी होती हैं जो सिर्फ एक सीजन तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि दर्शकों के दिलों में अपनी गहरी छाप छोड़कर अगले अध्याय की प्रतीक्षा को एक उत्सव में बदल देती हैं। ऐसी ही एक कहानी है फर्जी, जिसने अपने पहले सीजन से ही दर्शकों के बीच एक अलग पहचान बनाई। अब इस चर्चित वेब सीरीज के दूसरे सीजन की आधिकारिक घोषणा ने फैंस के उत्साह को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। 19 मार्च को अमेजन प्राइम वीडियो द्वारा किए गए इस ऐलान के बाद से सोशल मीडिया से लेकर मनोरंजन जगत तक, हर जगह इसी की चर्चा हो रही है। इस खास मौके पर आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में सीरीज की पूरी टीम मौजूद रही, जिसमें मुख्य अभिनेता शाहिद कपूर भी शामिल थे। इस दौरान उन्होंने न केवल अपनी खुशी जाहिर की, बल्कि इस नए सीजन को लेकर कुछ दिलचस्प संकेत भी दिए। उन्होंने बताया कि वह पिछले दो वर्षों से इस पल का इंतजार कर रहे थे और अब जब 'फर्जी सीजन 2' की शूटिंग शुरू हो चुकी है, तो उनके भीतर एक अलग ही उत्साह है। उनके शब्दों में यह केवल एक प्रोजेक्ट नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव है, जिससे वह गहराई से जुड़े हुए हैं। शाहिद कपूर ने अपने किरदार को अपने करियर के सबसे पसंदीदा किरदारों में से एक बताया। उन्होंने कहा कि इस किरदार में उन्हें एक अलग तरह की स्वतंत्रता और चुनौती दोनों मिली हैं, जिसने उनके अभिनय को एक नया आयाम दिया है। पहले सीजन में उनके अभिनय को दर्शकों और आलोचकों दोनों ने सराहा था, और अब दूसरे सीजन में उनसे और भी अधिक उम्मीदें की जा रही हैं। यही कारण है कि वह इस बार और भी ज्यादा मेहनत और तैयारी के साथ अपने किरदार को पर्दे पर उतारने के लिए तैयार हैं। सीरीज की कहानी को लेकर भी उन्होंने कुछ अहम संकेत दिए। उनके अनुसार, दूसरा सीजन पहले से एक कदम आगे होगा, लेकिन यह विस्तार पूरी तरह से स्वाभाविक तरीके से किया जाएगा। इसका मतलब यह है कि कहानी में कोई जबरदस्ती का मोड़ या अनावश्यक जटिलता नहीं होगी, बल्कि वही सहजता और गहराई देखने को मिलेगी, जिसने पहले सीजन को इतना सफल बनाया था। यह बात दर्शकों के लिए एक राहत की तरह है, क्योंकि अक्सर सीक्वल में कहानी की गुणवत्ता पर सवाल उठते हैं।

डिजिटल मनोरंजन का नया युगः अमेजन प्राइम वीडियो ने 55 नई सीरीज़ और फिल्मों से रचा इतिहास

भारतीय डिजिटल मनोरंजन उद्योग में एक बार फिर बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है, जब अमेजन प्राइम वीडियो ने अपने बहुप्रतीक्षित 'प्राइम वीडियो प्रेज़ेंट्स 2026' कार्यक्रम में अब तक की सबसे विशाल भारतीय ओरिजिनल कंटेंट स्लेट का ऐलान किया। इस घोषणा के साथ यह साफ हो गया है कि आने वाले समय में दर्शकों को न केवल अधिक विकल्प मिलेंगे, बल्कि विविधता और गुणवत्ता के नए मानक भी स्थापित होंगे। करीब 55 नई सीरीज़ और फिल्मों के इस भव्य लाइनअप ने मनोरंजन जगत में हलचल मचा दी है और इसे भारतीय ओटीटी इतिहास के सबसे बड़े ऐलानों में से एक माना जा रहा है। इस विशाल कंटेंट स्लेट की सबसे खास बात इसकी विविधता है। हिंदी, तमिल और तेलुगु समेत कई भाषाओं में तैयार किए जा रहे इन प्रोजेक्ट्स में स्क्रिप्टेड और अनस्क्रिप्टेड दोनों तरह की कहानियों को शामिल किया गया है। यह कदम न केवल अलग-अलग भाषाई दर्शकों को जोड़ने का प्रयास है, बल्कि भारतीय कहानियों को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है। प्लेटफॉर्म अब केवल महानगरों तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि छोटे शहरों और क्षेत्रीय दर्शकों की पसंद को भी केंद्र में रखकर आगे बढ़ रहा है।

इस नए लाइनअप में कई बड़े और दिलचस्प प्रोजेक्ट्स शामिल हैं, जो पहले से ही चर्चा का विषय बन चुके हैं। निर्देशक निखिल आडवाणी की 'द रिवोल्यूशनरीज़' एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायक कहानी के रूप में सामने आएगी, जबकि विजय वर्मा अभिनीत 'मटका किंग' अपराध और सत्ता के जटिल संबंधों को उजागर करेगी। अली फज़ल और सोनाली बेंद्रे की 'राख' भी इस सूची में शामिल है, जो भावनात्मक और रहस्यमयी कथा लेकर आएगी। वहीं रैपर किंग की 'लुक्खे' युवा पीढ़ी की कहानी को एक नए अंदाज में पेश करेगी। इस स्लेट में भारत की पहली हिंदी सुपरहीरो सीरीज़ 'वंशः द कलयुग वॉरियर्स' को भी शामिल किया गया है, जो भारतीय दर्शकों के लिए एक नया और अनोखा अनुभव लेकर आने वाली है। यह प्रोजेक्ट खास इसलिए भी है क्योंकि भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर सुपरहीरो शैली अभी तक सीमित रही है, और यह सीरीज़ इस क्षेत्र में एक नई शुरुआत कर सकती है। सिर्फ नई कहानियों तक ही यह ऐलान सीमित नहीं है, बल्कि दर्शकों की पसंदीदा सीरीज़ के नए सीजन भी इस लाइनअप का हिस्सा हैं। फर्जी का दूसरा सीजन, 'पंचायत सीज़न 5', 'कॉल मी बे सीज़न 2', 'दुपहिया सीज़न 2', 'दहाड़ सीज़न 2' और 'द ट्रेटर्स सीज़न 2' जैसे प्रोजेक्ट्स पहले से ही फैंस के बीच उत्सुकता का कारण बने हुए हैं। इन सीरीज़ की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि मजबूत कहानी और बेहतरीन अभिनय दर्शकों को लंबे समय तक बांधे रख सकते हैं। क्षेत्रीय कंटेंट के विस्तार पर भी अमेजन प्राइम वीडियो ने खास ध्यान दिया है। तमिल, तेलुगु और अन्य भाषाओं में कई नई कहानियां जोड़ी गई हैं, जो स्थानीय संस्कृति और जीवनशैली को दर्शाने के साथ-साथ व्यापक दर्शकों को आकर्षित करने की क्षमता रखती हैं। यह कदम इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर क्षेत्रीय कंटेंट का महत्व और भी बढ़ने वाला है। इस मौके पर नए सहयोगों की घोषणा ने भी लोगों का ध्यान खींचा। ऋतिक रोशन की एचआरएक्स फिल्म्स ने 'स्टॉर्म' और 'मेस' के साथ स्ट्रीमिंग की दुनिया में कदम रखा है, जबकि आलिया भट्ट की इटरनल सनशाइन प्रोडक्शंस 'डोंट बी शाय' के जरिए अपनी नई प्रस्तुति लेकर आएगी। इन बड़े नामों की भागीदारी से यह साफ है कि अब ओटीटी प्लेटफॉर्म्स को फिल्म इंडस्ट्री के बड़े सितारों का भी भरपूर समर्थन मिल रहा है। कार्यक्रम में अमेज़न एमजीएम स्टूडियोज़ इंडिया की पांच नई थिएटर फिल्मों की भी घोषणा की गई, जिनमें 'रफ्तार', 'वाइब', 'दिलकशी', 'नई नवेली' और 'कुकू की कुंडली' शामिल हैं।

ईद 2027 पर फिर बजेगा बॉक्स ऑफिस का बिगुल: सलमान खान की अगली फिल्म की तैयारी शुरू

बॉलीवुड और ईद का रिश्ता जितना खास माना जाता है, उतना ही खास नाम इस परंपरा से जुड़ा है—सलमान खान। पिछले कई वर्षों से यह सिलसिला दर्शकों के लिए किसी त्योहार से कम नहीं रहा, जब ईद के मौके पर सलमान की फिल्म रिलीज होती है और सिनेमाघरों में उत्सव जैसा माहौल बन जाता है। 'वांटेड', 'दबंग', 'किक' और 'बजरंगी भाईजान' जैसी फिल्मों ने इस परंपरा को न केवल मजबूत किया, बल्कि इसे एक अटूट ब्रांड बना दिया। हालांकि इस साल ईद पर उनकी कोई नई फिल्म दर्शकों को देखने को नहीं मिलेगी, लेकिन अब जो खबर सामने आ रही है, उसने फैंस के बीच फिर से उत्साह की लहर दौड़ा दी है। ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक, सलमान खान ने 2027 की ईद को ध्यान में रखते हुए अपनी अगली फिल्म की तैयारी अभी से शुरू कर दी है। यह केवल एक सामान्य फिल्म नहीं, बल्कि एक बड़े स्तर का प्रोजेक्ट होने वाला है, जिसे खास तौर पर त्योहार के मौके पर रिलीज करने की रणनीति बनाई जा रही है। इस बार सलमान खान साउथ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री के नामचीन निर्माता दिल राजू और निर्देशक वामशी पाडिलपल्ली के साथ हाथ मिला सकते हैं। यह संभावित सहयोग बॉलीवुड और साउथ सिनेमा के बीच एक और बड़ी कड़ी साबित हो सकता है। सूत्रों की मानें तो इस फिल्म को लेकर बातचीत अभी जारी है और दोनों पक्ष इसे एक भव्य प्रोजेक्ट के रूप में आकार देने के लिए गंभीरता से विचार कर रहे हैं। खास बात यह है कि इस फिल्म का शेड्यूल और निर्माण इस तरह से प्लान किया जा रहा है, ताकि यह ईद 2027 के मौके पर सिनेमाघरों में दस्तक दे सके। यह रणनीति नई नहीं है, लेकिन सलमान खान के लिए यह हमेशा सफल रही है, और यही कारण है कि निर्माता-निर्देशक भी इस फॉर्मूले को दोहराने के पक्ष में नजर आ रहे हैं। बताया जा रहा है कि यह फिल्म एक्शन और इमोशन का जबरदस्त मिश्रण होगी, जिसमें सलमान खान अपने चिर-परिचित अंदाज में नजर आएंगे। उनके किरदार में वही दमदार एक्शन, भावनात्मक गहराई और मनोरंजन का तड़का होगा, जिसकी उम्मीद दर्शक उनसे करते हैं। सलमान की फिल्मों की खासियत यही रही है कि वे बड़े पैमाने पर बनाई जाती हैं और हर वर्ग के दर्शकों को आकर्षित करती हैं। इस बार भी मेकर्स इसी दिशा में काम कर रहे हैं, ताकि फिल्म को एक पैन-इंडिया अपील दी जा सके। फिल्म के प्री-प्रोडक्शन का काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। स्क्रिप्ट, लोकेशन और तकनीकी पहलुओं पर बारीकी से काम किया जा रहा है, ताकि शूटिंग शुरू होते ही किसी प्रकार की बाधा न आए। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस फिल्म की शूटिंग अप्रैल से शुरू होने की योजना है, और इसे तेजी से पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। मेकर्स चाहते हैं कि फिल्म 2027 की पहली छमाही में पूरी तरह तैयार हो जाए, ताकि ईद के मौके पर इसे भव्य तरीके से रिलीज किया जा सके। यह भी कहा जा रहा है कि इस प्रोजेक्ट को लेकर सलमान खान खुद भी काफी उत्साहित हैं। वह इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि ईद पर उनकी फिल्मों का दर्शकों के बीच कितना बड़ा क्रेज होता है, और यही कारण है कि वह इस फिल्म को खास बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते। उनके लिए यह केवल एक और फिल्म नहीं, बल्कि अपने फैंस के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव का अवसर भी है। बॉलीवुड में पिछले कुछ समय से साउथ इंडियन सिनेमा के साथ सहयोग का ट्रेंड तेजी से बढ़ा है। बड़े-बड़े सितारे और निर्माता-निर्देशक एक साथ आकर पैन-इंडिया फिल्में बना रहे हैं, जो देशभर में व्यापक स्तर पर पसंद की जा रही हैं। ऐसे में दिल राजू और वामशी पाडिलपल्ली के साथ सलमान खान का संभावित प्रोजेक्ट इस ट्रेंड को और मजबूत कर सकता है। फिल्म इंडस्ट्री के जानकारों का मानना है कि यदि यह प्रोजेक्ट फाइनल हो जाता है, तो यह आने वाले समय की सबसे बड़ी फिल्मों में से एक हो सकता है। सलमान खान की स्टार पावर, साउथ के अनुभवी निर्माता-निर्देशक की टीम और ईद का त्योहार—इन तीनों का मेल बॉक्स ऑफिस पर एक बड़ा धमाका कर सकता है। हालांकि अभी तक इस फिल्म की आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन जिस तरह से तैयारियां चल रही हैं, उससे यह साफ है कि कुछ बड़ा होने वाला है।

हिन्दी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail.com

04 मुंबई, शनिवार, 21 मार्च 2026 महाराष्ट्र
epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

महाराष्ट्र बजट 2026: विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर और रोजगार पर सरकार का बड़ा फोकस - गणेश नाइक

ठाणे। ठाणे में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में महाराष्ट्र के फॉरेस्ट मिनिस्टर गणेश नाइक ने राज्य बजट 2026 को लेकर विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस द्वारा प्रस्तुत यह बजट राज्य के समग्र विकास को गति देने वाला है। उन्होंने बताया कि सरकार ने 2027 तक महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और मेगा प्रोजेक्ट्स पर जोर

गणेश नाइक ने बताया कि इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर को प्राथमिकता दी गई है। गायमुख से फाउंटेन के बीच सबवे निर्माण, पेन में "थर्ड मुंबई" का विकास और पालघर में एशिया के दसवें सबसे बड़े पोर्ट का निर्माण जैसे बड़े प्रोजेक्ट शामिल हैं। "थर्ड मुंबई" प्रोजेक्ट से करीब 12 लाख रोजगार सृजित होने की उम्मीद है, वहीं एनर्जी सेक्टर में हर जिले में MSEM सेंटर स्थापित कर लगभग 5 लाख लोगों को नौकरी के अवसर मिलेंगे।

पर्यावरण और हरित पहल

राज्य सरकार ने पर्यावरण संरक्षण

के तहत 300 करोड़ पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान को भी बढ़ावा दिया जाएगा।

किसानों के लिए बड़ी घोषणाएं

नाइक ने कहा कि बजट में किसानों को विशेष राहत दी गई है। पिछले वर्ष भारी बारिश से प्रभावित किसानों का 2 लाख रुपये तक का कर्ज माफ किया गया है, जबकि नियमित ऋण चुकाने वाले किसानों को 50 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।

एग्रीस्टैक, महावेध, क्रॉप्सैप और महाDBT जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए कृषि क्षेत्र को मजबूत किया जाएगा। "मुख्यमंत्री बलिराजा फ्री बिजली योजना" के तहत करीब 20 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जबकि "मुख्यमंत्री सौर कृषि वाहिनी योजना 2.0" से 16 हजार मेगावाट ऊर्जा उत्पादन और किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है।

जल प्रबंधन और नदी जोड़ परियोजनाएं

राज्य में जल संकट से निपटने के लिए विभिन्न नदी जोड़ परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। वैनगंगा-नलगंगा, दमनगंगा-वैतरणा-गोदावरी, नार-पार-गिरना और दमनगंगा-एकदारे-गोदावरी परियोजनाओं के लिए हजारों करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। कोल्हापुर और सांगली में बाढ़ नियंत्रण के लिए विश्व बैंक की मदद से प्रोजेक्ट लागू किए जाएंगे।

शहरी और ग्रामीण कनेक्टिविटी में सुधार

महाराष्ट्र में मेट्रो नेटवर्क को 1200 किलोमीटर तक विस्तारित किया जाएगा। मुंबई-नवी मुंबई एयरपोर्ट मेट्रो, वडाला-गेटवे ऑफ इंडिया मेट्रो-11 और पुणे मेट्रो के दूसरे चरण को मंजूरी दी गई है।

इसके अलावा, "महाराष्ट्र अमृतकाल रोड डेवलपमेंट योजना" के तहत हजारों किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया जाएगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी को मजबूत किया जाएगा।

गणेश नाइक ने विश्वास जताया कि इन सभी योजनाओं से राज्य में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा होंगे और महाराष्ट्र विकास की नई ऊंचाइयों को छुएगा।

बहादुरी से पीछा करने और लगातार गाड़ी चोर पकड़ा गया,गुड़ी पड़वा पर ट्रैफिक पुलिस का शानदार प्रदर्शन

ठाणे। गुड़ी पड़वा पर जब हर कोई नए साल का स्वागत करने के जोश में था, तब ट्रैफिक पुलिस की सतर्कता और हिम्मत की वजह से एक लगातार गाड़ी चोर पकड़ा गया है। चोर का नाम लक्ष्मण उर्फ आदित्य तुकाराम घुड़े (निवासी सरलगांव, मुरबाड़) है और ट्रैफिक पुलिस ने उल्हासनगर यूनिट में ट्रैफिक नियम तोड़ने के ऑपरेशन के दौरान एक फोन कॉल की वजह से उसे चोरी की दोपहिया गाड़ी के साथ पकड़ने में कामयाबी हासिल की है। इस बीच, शुरुआती जांच में पता चला है कि इस चोर के खिलाफ गाड़ी चोरी के 30 मामले दर्ज हैं।गुरुवार, 19 मार्च को दोपहर के करीब पुलिस कांस्टेबल संतोष भोईर बिरला गेट और दत्तावाड़ी रोड के बीच ट्रैफिक नियम तोड़ने वाली गाड़ियों के खिलाफ कार्रवाई कर रहे थे। ऑपरेशन पूरा करके ऑफिस लौटने के बाद दोपहर 2.19 बजे उल्हासनगर हेल्पलाइन पर ठाणे ट्रैफिक कंट्रोल रूम से ज़रूरी जानकारी मिली। पता चला कि एक गाड़ी के मालिक ने शिकायत दर्ज कराई थी कि ऑपरेशन के दौरान रोकी गई काली हीरो स्प्लेंडर (MH-09-FW-4035) दोपहिया गाड़ी चोरी

हो गई है। बिना समय बर्बाद किए, पुलिस ने तुरंत ठाणे कंट्रोल रूम से बात की और मौके पर पहुँची। अंबिका देशी बार के सामने, शिव रोड पर एक संदिग्ध व्यक्ति दोपहिया वाहन पर भागने की तैयारी करते देखा गया। जब पुलिस ने उसे रोकने की कोशिश की, तो वह दोपहिया वाहन छोड़कर भागने लगा। इस समय, पुलिस कांस्टेबल संतोष भोईर ने तुरंत उसका पीछा किया और उसे गिरफ्तार कर लिया।

इस दौरान हुई हाथापाई में भोईर के माथे पर हल्की चोट आई। गिरफ्तार संदिग्ध ने अपना नाम लक्ष्मण उर्फ आदित्य तुकाराम घुडे बताया। जांच के दौरान, बाइक के मालिक ओमकार बबन भारदे (कोल्हापुर के रहने वाले) से संपर्क किया गया और उन्होंने कन्फर्म किया कि बाइक चोरी की थी।इस मामले में उल्हासनगर पुलिस स्टेशन में इंडियन पीनल कोड की धारा 122 (1) और 303 (2) के तहत केस दर्ज किया गया है और आगे की जांच चल रही है। इस बीच, इस बहादुरी और अलर्ट एक्शन के लिए, पुलिस आयुक्त आशुतोष डुंबरे और अतिरिक्त पुलिस आयुक्त डॉ. ज्ञानेश्वर चव्हाण,ट्रैफिक पुलिस उपायुक्त पंकज शिरसाट ने बताया कि पुलिस कांस्टेबल संतोष भोईर को एक स्पेशल अवॉर्ड से सम्मानित करेंगे।

घाटे से मुनाफे की राह पर महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन निगम: डीजल बचत, विज्ञापन और फ्यूल पंप से बदलेगी एसटी की तस्वीर

मुंबई से लेकर गांव-देहात तक अपनी मजबूत पकड़ रखने वाली महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन निगम यानी एसटी बस सेवा को लंबे समय से राज्य की जीवनरेखा माना जाता है। हर दिन लाखों लोग इस सेवा पर निर्भर रहते हैं, लेकिन बीते वर्षों में यह संस्था भारी आर्थिक संकट से जूझ रही थी। करीब 12,000 करोड़ रुपये के घाटे ने एसटी की वित्तीय स्थिति को गंभीर बना दिया था। अब इस संकट से उबारने के लिए राज्य के परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक ने एक व्यापक और दूरदर्शी 'मेगा रिकवरी प्लान' पेश किया है, जो न केवल खर्च कम करेगा, बल्कि आय के नए स्रोत भी तैयार करेगा।

इस योजना की सबसे बड़ी खासियत यह है कि अब एसटी केवल यात्रियों को ढोने तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि खुद एक बहुआयामी राजस्व मॉडल अपनाकर अपने घाटे को कम करने की दिशा में आगे बढ़ेगी। इसके तहत ईंधन की लागत में कटौती, फ्यूल पंप के जरिए कमाई, डिजिटल विज्ञापन और सौर ऊर्जा जैसे कई नए कदम शामिल किए गए हैं। यह रणनीति एसटी को एक पारंपरिक परिवहन सेवा से आगे बढ़ाकर एक आधुनिक और आत्मनिर्भर संस्था में बदलने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

एसटी के खर्चों में सबसे बड़ा हिस्सा ईंधन का होता है। इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने डीजल खरीद की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी बनाया है। पहले जहां डीजल पर प्रति लीटर 2.70 रुपये की छूट मिलती थी, वहीं अब टेंडर प्रक्रिया के जरिए इसे बढ़ाकर 5.13 रुपये प्रति लीटर कर दिया गया है। इस एक फैसले से ही सालाना लगभग 241 करोड़ रुपये की सीधी बचत होने का अनुमान है। यह बचत एसटी के घाटे को कम करने में एक मजबूत आधार साबित हो सकती है।

इसके अलावा, एसटी अब अपने विशाल संसाधनों का बेहतर उपयोग करने की दिशा में भी कदम बढ़ा रही है। राज्यभर में फैली इसकी खाली जमीन, जो अब तक अनुपयोगी पड़ी थी, उसे अब राजस्व के स्रोत में बदला जाएगा। योजना के तहत 100 से 110 मल्टी-मॉडल फ्यूल पंप स्थापित किए जाएंगे, जहां आम नागरिकों के लिए पेट्रोल, डीजल, सीएनजी और एलएनजी जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। यह प्रोजेक्ट पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) मॉडल पर आधारित होगा, जिससे न केवल निवेश का बोझ कम होगा, बल्कि संचालन भी अधिक कुशल तरीके से हो सकेगा। इस पहल से सालाना लगभग 100 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय होने की उम्मीद जताई जा रही है।

एसटी के सामने एक और बड़ी चुनौती लंबे समय से ईंधन की चोरी और हेराफेरी की रही है। आंकड़ों के मुताबिक, हर 100 लीटर डीजल में से 4 से 5 लीटर तक की चोरी हो जाती थी, जिससे संस्था को भारी नुकसान उठाना पड़ता था। अब इस समस्या से निपटने के लिए अत्याधुनिक तकनीक का सहारा लिया जा रहा है। सभी फ्यूल पंपों पर एआई आधारित सेंसर लगाए जाएंगे, जो ईंधन की हर बूंद पर नजर रखेंगे। किसी भी तरह की गड़बड़ी होने पर यह सिस्टम तुरंत अलर्ट जारी करेगा, जिससे चोरी पर पूरी तरह से अंकुश लगाने में मदद मिलेगी। यह कदम न केवल पारदर्शिता बढ़ाएगा, बल्कि कर्मचारियों के बीच जवाबदेही भी सुनिश्चित करेगा।

आय बढ़ाने के लिए एसटी ने विज्ञापन के क्षेत्र में भी बड़े स्तर पर कदम उठाने की योजना बनाई है। हर दिन लगभग 55 लाख यात्री एसटी बसों और 600 से अधिक बस स्टेशनों का उपयोग करते हैं। इतनी बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंच बनाना किसी भी विज्ञापनदाता के लिए आकर्षक अवसर है। इसी को ध्यान में रखते हुए बसों के अंदर और स्टेशनों पर डिजिटल विज्ञापन लगाने की योजना तैयार की गई है। अगले पांच वर्षों में इस माध्यम से करीब 250 करोड़ रुपये की आय का लक्ष्य रखा गया है। यह पहल एसटी को एक नए व्यावसायिक मॉडल की ओर ले जाएगी, जहां परिवहन के साथ-साथ विज्ञापन भी एक महत्वपूर्ण आय स्रोत बन जाएगा।

ऊर्जा के क्षेत्र में भी एसटी आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है। इसके तहत डिपो, वर्कशॉप और बस स्टेशनों की छतों पर सोलर पैनल लगाए जाएंगे। इससे न केवल बिजली का खर्च कम होगा, बल्कि अतिरिक्त बिजली को बेचकर भी आय अर्जित की जा सकेगी। अनुमान है कि इस पहल से हर साल 10 से 15 करोड़ रुपये की अतिरिक्त कमाई हो सकती है। यह कदम पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा मिलेगा।

इसके साथ ही, पुराने और अनुपयोगी वाहनों को स्क्रैपिंग के जरिए बेचने की योजना भी बनाई गई है, जिससे अतिरिक्त राजस्व प्राप्त किया जा सकेगा। वहीं, एआई तकनीक के माध्यम से ड्राइवरों की ड्यूटी मैनेजमेंट को भी अधिक प्रभावी बनाया जाएगा, जिससे संचालन लागत में कमी आएगी और सेवा की गुणवत्ता में सुधार होगा। इन सभी उपायों को मिलाकर कुल 500 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय जुटाने का लक्ष्य रखा गया है।

यह पूरा 'मेगा रिकवरी प्लान' इस बात का संकेत है कि अब सरकारी संस्थाएं भी पारंपरिक तरीकों से हटकर आधुनिक और व्यावसायिक सोच को अपना रही हैं। प्रताप सरनाईक की इस पहल को एक साहसिक और दूरदर्शी कदम माना जा रहा है, जो अन्य राज्यों के लिए भी एक उदाहरण बन सकता है।

पारिवारिक तनाव बना जानलेवा: खार में युवक की आत्महत्या, पत्नी पर प्रताड़ना और उकसाने का आरोप

मुंबई के खार पश्चिम इलाके से एक दर्दनाक घटना सामने आई है, जिसने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि घरेलू विवाद और मानसिक तनाव किस हद तक किसी व्यक्ति को तोड़ सकते हैं। 33 वर्षीय सुभाष यादव ने अपने ही घर में फांसी लगाकर जीवन समाप्त कर लिया। इस घटना ने न केवल एक परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया, बल्कि समाज के सामने भी पारिवारिक कलह के गंभीर परिणामों को उजागर कर दिया है। मामले में मृतक की पत्नी पर प्रताड़ना और आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप लगे हैं, जिसके आधार पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

घटना खारदांडा स्थित विश्वदीप सोसायटी की है, जहां सुभाष यादव अपने परिवार के साथ रहता था। जानकारी के अनुसार, 13 जनवरी 2026 को उसने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उस समय यह घटना एक सामान्य आत्महत्या के रूप में सामने आई थी, लेकिन अब करीब दो महीने बाद मृतक की मां उर्मिला यादव ने 19 मार्च को खार पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराते हुए मामले को एक नया मोड़ दे दिया है। उन्होंने अपनी बहू अनीता यादव पर गंभीर आरोप लगाए हैं, जिनके आधार पर पुलिस ने आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया है।

मृतक की मां का कहना है कि सुभाष और उसकी पत्नी के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा था। यह विवाद केवल कहासुनी तक सीमित नहीं था, बल्कि अक्सर मारपीट और गाली-गलौच तक पहुंच जाता था। उनका आरोप है कि अनीता यादव अपने पति के साथ शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ना करती थी। परिवार के पास इस कथित प्रताड़ना के कुछ वीडियो भी मौजूद हैं, जिन्हें सबूत के तौर पर पुलिस को सौंपे जाने की बात कही जा रही है। यदि ये आरोप सही साबित होते हैं, तो यह मामला और भी गंभीर हो सकता है।

घटना वाले दिन की परिस्थितियां भी कई सवाल खड़े करती हैं। बताया जा रहा है कि 13 जनवरी की शाम करीब 4:30 बजे अनीता यादव घर लौटी, जिसके बाद पति-पत्नी के बीच फिर से विवाद शुरू हो गया। आरोप है कि इस दौरान दोनों के बीच मारपीट भी हुई। इसके बाद शाम करीब 6:30 बजे जब परिवार के अन्य सदस्य घर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि कमरे का दरवाजा बाहर से बंद था। जब दरवाजा खोला गया, तो सुभाष पंखे से लटका हुआ मिला। यह दृश्य परिवार के लिए बेहद भयावह था। वहीं, उनका 6 वर्षीय बेटा बाथरूम में बंद मिला, जिससे यह घटना और भी संवेदनशील बन जाती है।

यह मामला केवल एक दिन के विवाद का परिणाम नहीं था, बल्कि इसके पीछे लंबे समय से चल रहा तनाव था। जानकारी के अनुसार, सुभाष और अनीता की शादी वर्ष 2018 में हुई थी, लेकिन कुछ समय बाद ही उनके रिश्ते में दरार आने लगी। दोनों के बीच घरेलू हिंसा का मामला पहले से ही बांद्रा कोर्ट में लंबित है। यह तथ्य इस बात की ओर इशारा करता है कि दंपती के बीच संबंध काफी समय से खराब चल रहे थे और स्थिति धीरे-धीरे गंभीर होती जा रही थी।

बताया गया है कि अनीता यादव कुछ समय से अलग रह रही थी और हाल ही में वापस घर आई थी। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या दोनों के बीच सुलह की कोई संभावना थी या फिर तनाव और बढ़ गया था।

घुसपैठ पर सियासत तेज: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने मांगा अमित शाह और देवेंद्र फडणवीस का इस्तीफा

मुंबई में अवैध घुसपैठ के मुद्दे पर राजनीतिक घमासान तेज हो गया है। जहां एक ओर भारतीय जनता पार्टी इस विषय को प्रमुखता से उठा रही है, वहीं विपक्षी दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसे केंद्र और राज्य सरकार की सुरक्षा व्यवस्था की विफलता करार देते हुए जोरदार पलटवार किया है। कांग्रेस नेताओं ने सीधे तौर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की जिम्मेदारी तय करते हुए उनके इस्तीफे की मांग उठाई है।

मुंबई कांग्रेस अध्यक्ष और सांसद वर्षा गायकवाड़ ने इस मुद्दे पर तीखा बयान देते हुए कहा कि जब पिछले 12 वर्षों से केंद्र और राज्य दोनों जगह भाजपा की सरकार है, तब भी यदि मुंबई में बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठ जारी है, तो यह सीधे-सीधे प्रशासनिक असफलता को दर्शाता है। उन्होंने सवाल उठाया कि आखिर इतनी लंबी अवधि तक सत्ता में रहने के बावजूद सरकार इस समस्या पर नियंत्रण क्यों नहीं कर पाई। उनके अनुसार, यदि सुरक्षा एजेंसियां और प्रशासन सक्रिय होते, तो स्थिति इतनी गंभीर नहीं होती।

वर्षा गायकवाड़ ने मुख्यमंत्री से अपील करते हुए कहा कि इस मामले की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए अमित शाह को अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए। उनका मानना है कि देश की आंतरिक सुरक्षा का दायित्व गृह मंत्रालय के पास होता है, और यदि राजधानी मुंबई में ही घुसपैठ की घटनाएं सामने आ रही हैं, तो यह गंभीर चिंता का विषय है।

कांग्रेस ने भाजपा पर यह आरोप भी लगाया कि वह इस मुद्दे को जानबूझकर उछाल रही है, ताकि जनता का ध्यान अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं से हटाया जा सके। पार्टी का कहना है कि वर्तमान समय में आम जनता एलपीजी गैस की कमी, बढ़ती महंगाई और छोटे व्यवसायों के बंद होने जैसी समस्याओं से जूझ रही है, लेकिन सरकार इन मुद्दों पर ध्यान देने के बजाय राजनीतिक लाभ के लिए घुसपैठ का मुद्दा उठा रही है। कांग्रेस नेताओं के अनुसार, यह रणनीति जनता के वास्तविक मुद्दों को दबाने का प्रयास है।

इस बीच, कांग्रेस प्रवक्ता सचिन सावंत ने भी सरकार पर निशाना साधते हुए कुछ आंकड़े पेश किए। उन्होंने दावा किया कि यूपीए सरकार के कार्यकाल (2004-2014) के दौरान लगभग 87,000 बांग्लादेशी नागरिकों को वापस भेजा गया था, जबकि वर्तमान सरकार के समय में यह संख्या बेहद कम है। उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि जब मुंबई पुलिस और गृह मंत्रालय के पास घुसपैठियों की कोई स्पष्ट और आधिकारिक संख्या उपलब्ध नहीं है, तो फिर इस मुद्दे पर इतनी बड़ी राजनीतिक बयानबाजी किस आधार पर की जा रही है।

सचिन सावंत ने यह भी कहा कि आंकड़ों की पारदर्शिता के बिना किसी भी तरह का दावा करना केवल जनता को भ्रमित करने जैसा है।

राशन देने के बहाने महिला से 3 लाख रुपये की ठगी; घटना ठाणे में हुई

ठाणे। वागले एस्टेट पुलिस ने बताया कि वागले एस्टेट इलाके की 53 वर्षीय महिला से राशन देने के बहाने 3 लाख रुपये की ठगी की गई। यह घटना 16 मार्च, 2026 को दोपहर करीब 12.15 बजे घटी। वागले की रहने वाली 53 वर्षीय लता सावंत को लुटेरों ने सड़क पर रोका और पास की एक गली में ले गए। लुटेरों ने कहा, हमारे सेठ लोगों को मुफ्त राशन बांट रहे हैं। उनका भरोसा जीतने के लिए उन्होंने सावंत को 500 रुपये का नोट भी दिया। फिर उन्होंने यह कहते हुए सावंत को गले से सोने का मंगलसूत्र उतारने के लिए मजबूर किया कि सेठ को काले मोतियों से एलर्जी है। आरोपियों ने उनसे अपना पर्स और चप्पल एक सफेद थैले में रखने

को कहा। काफी देर बाद सावंत ने थैला खोला तो देखा कि उसमें सिर्फ चप्पलें थीं, पर्स या 23,6 ग्राम वजन का लगभग 3 लाख रुपये का सोने का मंगलसूत्र नहीं था। अज्ञात लुटेरों के खिलाफ श्रीनगर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है।

ऐसी घटनाएं आए दिन सुनने को मिल रही है कुछ दिनों पहले दीवा में भी इसी तरह की लुट की गई थी। लगता है कोई लुटेरा गिरोह सक्रिय है जो कि हिप्नोटाइज ओर इसी तरह की घटनाओं को अंजाम दे रहा है। महाराष्ट्र पुलिस के लिए एक तरह से इस गिरोह की खुली चुनौती है। जिस तर ये गिरोह दिन दहाड़े खुल्ले आम सड़कों ओर आम रास्तों पर बेखौफ लूट की घटना को अंजाम देकर फरार हो जाते हैं।

मामूली कहा सुनी में बात चाकू से हमले तक पहुंची

ठाणे:वागले एस्टेट इलाके में माघी गणपति के लिए खरीदी जाने वाली बैंजो के पैसों को लेकर हुए विवाद में एक युवक पर धारदार हथियार से हमला करने की घटना सामने आई है। श्रीनगर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज कर लिया गया है और आरोपी फरार है।

वागले एस्टेट क्षेत्र के निवासी प्रतीक सकत (30) द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के अनुसार, उनके मित्र सोहम नांगरे (21 वर्ष) किसन नगर के बल्लालेश्वर मित्र मंडल के अध्यक्ष हैं। जनवरी 2026 में, मंडल ने माघी गणपति स्थापना समारोह में प्रयुक्त होने वाले बैंजो का ऑर्डर दिया था। हालांकि, जब ऑर्डर की राशि का भुगतान नहीं किया गया, तो संबंधित व्यक्ति ने सकत से बार-बार पैसे की मांग की। इससे सकत और नांगरे के बीच कहासुनी हो गई। 19 मार्च,

2026 को लगभग 12:30 बजे, जब सकत किसन नगर में मैदान के सामने पंतपारी के पास गए, तो उनकी मुलाकात उनके मित्र शौर्य अचरेकर से हुई। जब दोनों बातचीत कर रहे थे, तभी सोहम नांगरे अचानक पीछे से आया और तेज चाकू से सकत की कोहनी और बाएं हाथ की कलाई पर वार कर दिया। इस हमले में सकत का हाथ गंभीर रूप से घायल हो गया और बहुत खून बहने लगा। हमले के बाद, आरोपी ने उन्हें गाली दी और जान से मारने की धमकी दी। शौर्य अचरेकर की मोटरसाइकिल पर बैठकर घटनास्थल से फरार हो गया। घायल अवस्था में घर लौटने पर वह अपने पिता के साथ श्रीनगर पुलिस स्टेशन पहुंचा। डॉक्टरों ने शिकायत में बताया है कि उसके बाएं हाथ में कुल 13 टांके लगे हैं। इस संबंध में श्रीनगर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज कर लिया गया है और वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक गुलजारीलाल फड़तारे के मार्गदर्शन में आगे की जांच जारी है।